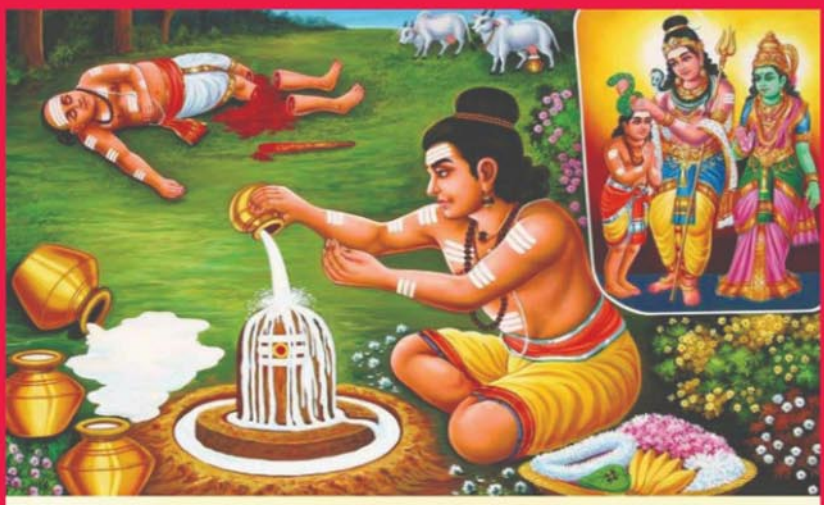
वर्ष 27 अंक 3 मार्च - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

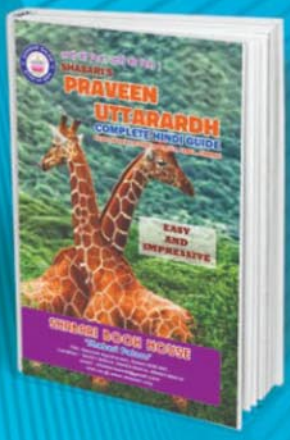




शिव महिमा सदा महान, मन यह तुम नित जान ।
शिव को भज शिव में मिले, चंडेश्वर पद सहित ।।

PRAVEEN UTTARARDH

Just ₹540/- Only



Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

1632 Pages

Just ₹750.00 only

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி



கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

आजीवन सदस्य ₹ 1000/- (20 वर्ष)

वर्ष 27, अंक 03 | मूल्य ₹ 3/- | मार्च - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
दर्द दिल का 7
चित्रा 8
पश्चाताप के आँसू..... 10
एकता में बल है 12
उसका घर 13
खड़ीबोली हिन्दी के पहले कवि .. 14
मौन अभिव्यक्ति..... 15
'मन स्मृति' एक संवेदनात्मक 16
स्वानुभूति: शरारतों के उस्ताद बंदरों 18
शिव रात 19
कवि हूँ मैं 20
अनिश्चित 21
ऋतुराज वसन्त..... 22
कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा 23
आधुनिक द्वंद्व 24
मजदूर 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
हाइकु..... 30
ग़ज़लें..... 31
होली 32
गोरी खौ होरी मन भावै 32
ग़ज़लें..... 33
रणनीति 34
ऋतुराज बसन्त..... 34
महाकुंभ 35
दो सहेलियाँ 35
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ? 36
देखो नटखट बंदर आया है..... 36
सत्य से मुलाकात करें । 37
सबके हाथों है मोबाईल ! 37
मस्ती की मनुहार..... 38
प्रतीक्षा करने की कला 38
भेड़ों के झुंड से निकला मैं 39
जीता है देश दिल्ली हो विशेष...! 39
जीवन 40
बारिश बनें 40
लक्ष्य 41
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 43
தமிழமுது 44
அறிந்திடுக 45
அருள் உலா 46

वाणिविकास् वाय्मॊழித् தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2025	20-04-2025	01-01-2025 to 28-02-2025	05-03-2025
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

एक बार फिर से तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति विरोध भावना कुछ दलों से फैलायी जा रही है । हिन्दी के प्रति विरुद्ध भावना रखनेवाले हिन्दी से दूर रहने तथा अपनी क्षेत्रीय भाषा को प्रधानता देने की बात कहकर लोगों के दिलों में विष भर रहे हैं । भाषा और भावना मानव मन से संबंधित है । दोनों को कोई बना या बिगाड नहीं सकता । भावनाओं को रोकने की शक्ति सिर्फ उक्त व्यक्ति की होती है । बाहर से कोई उसे रोक नहीं सकता । भाषा सीखने की क्षमता भी हर व्यक्ति पर आधारित है । इसे भी कोई रोक नहीं सकता ।

चुनने और पढने का अधिकार बच्चे के साथ सिर्फ माता-पिता का ही है । लेकिन सबको सबकुछ प्रदान करने का कर्तव्य सरकार का है । केन्द्र सरकार नई शिक्षा प्रणाली के जरिए हर बच्चे को तीन भाषाएँ सीखने का मौका प्रदान कर रहा है । यह तो उन्नति का राह है । कौन-सी भाषा पढना ? इसे अभिभावक और शिक्षार्थी तय कर लेंगे । इसे रोकने और इन स्कूलों को तमिलनाडु में आने से रोकने का दुस्साहस यहाँ के दल कर रहे हैं । यह भावी संतति के लिए उचित बिलकुल नहीं है । हिन्दी भारत की आत्मा है । यही विभिन्नता को दूर रखकर एकता बढाने का काम कर रही है ।

तमिलनाडु में सन् 1965 के लगभग जो हिन्दी विरोधी कार्य किये गये उसके बाद ही यहाँ की जनता हिन्दी को और बढावा देने लगी है । दक्षिण भारत में अपने ही बल पर हिन्दी पढने के लिए रुपये खर्च कर अधिकाधिक संख्या में हिन्दी लिखनेवाले छात्र हमारे तमिलनाडु में ही हैं । सरकार की तरफ से कोई मदद न अपनाकर अपने ही प्रयास के जरिए हिन्दी सीखनेवाले लाखों लोग हमारे इस प्रान्त में है । आगे भी निस्संदेह यह संख्या बढती रहेगी । किसी भी दल के कारण हिन्दी पढने की सिलसिला बंद नहीं होनेवाली है । हिन्दी अमृतमयी भारत की गरिमा बनकर रहेगी ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

गरीबी

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – गरीबी से ज्यादा दुख देनेवाला इस दुनिया में कुछ भी नहीं है । गरीबी के बराबर दुख देनेवाला सिर्फ गरीबी ही है ।

पापी कही जानेवाली गरीबी अगर किसी को सताने लगती है तो उसे इस जन्म में ही नहीं आनेवाले अगले जन्म में भी शांति बिलकुल नहीं मिलेगी ।

अगर किसी को गरीबी के कारण लालच उत्पन्न होगी तो वह उसी की नहीं बल्कि उसकी परंपरा की गरिमा को भी नष्ट कर देगी ।

गरीबी बहुत अच्छे कुल में जन्म लेनेवाले को भी बहुत ही निंदनीय तथा मानहीन शब्दों का प्रयोग करनेवाले बना देती है ।

गरीबी नामक दुख से अन्य सारे दुख अपने आप निकल आयेंगे । सब प्रकार के दुख गरीबी के कारण उत्पन्न होंगे ।

अच्छे से अच्छे विषयों को मान्य ग्रंथों से लेकर सुनाने पर भी गरीबी से सताये गये व्यक्ति से कही जानेवाले अनमोल बात भी मान सम्मान नहीं पायेगी ।

गरीबी से सताये जाने पर धर्म मार्ग से जो हट जाता है, उसकी माँ भी उसे अपना नहीं पराया मानेगी ।

हर गरीब यह महसूस करता है कि हत्या करने के समान दुख देनेवाली गरीबी जो कल सतायी थी वह आज भी नहीं आयें ।

योग आदि क्रियाओं से कोई आग के अंदर भी सो सकता है । लेकिन गरीबी से जो भूखा ठहरता है वह कभी भी आँख बंद कर सो नहीं सकता ।

अपने घर में कुछ सामान न रहने पर, गरीबी से सताये जाने पर सबकुछ त्यागनेवाले योगी के समान अपना सबकुछ त्याग न करने का कारण नमक और अन्न के दुश्मन बना रहना है ।

दर्द दिल का

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु



शब्दों में बताओ वह दम कहाँ है ?
करतूतों में हाँ वह प्रकट होता है
दिल जब पूरी तरह टूट जाता है
दिमाग वह भी काम नहीं करता है
दिल बुझ जाता है कुछ दिखता नहीं
कितना भी हो तेज दिमाग चलता नहीं
शरीर काम करता है मन कभी नहीं
शांत चित्त नहीं है तो जीवन भी नहीं ।



दर्द दूसरों का दिल नहीं समझता है
दर्द अपना दिल वह सह नहीं पाता है
दुख के घेरने पर चित्त अटक जाता है
दुख के मारे आदमी भी भटक जाता है
दुख दूर करने का मार्ग आसान नहीं है
दुख का कारण जानना आवश्यक वही है
दर्द भरा दिल आह भी भरने लगता है
दर्द भरा दिल आग सा धधकने लगता है ।



दुख दूर करने धीरज घरना होगा
आपत्ति से दूर जाने काम करना होगा
दर्द दिल को सांत्वना स्वयं देना होगा
राह देखते रहना नहीं राह बनाना होगा
दुख से जो अपने आपको खो जाता है
दुख से दूर वह कभी जा नहीं पाता है
आत्मविश्वास को जो दिल में भर पाता है
आदमी वही जीवन में जय अपनाता है ।

चित्रा

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

अरे अम्मा ! सुन रही हो क्या ? कहाँ चली गयीं ? आपको ढूँढते ढूँढते मैं रोज थक जाती हूँ। उम्र तो बहुत हो चुकी है लेकिन अब भी मन में सोलह साल की वीरांगणा का भाव है। एक जगह टिकती नहीं है। पता नहीं कहाँ कहाँ चली जाती है। अपनी माता को आवाज देती हुई मीना उसे हर जगह ढूँढने लगी। घर भर में उसे कहीं देख नहीं पायी। अब वह किसके घर में घुस बैठी है, कैसे ढूँढना है उसे ? एक बार फिर से जोर से चिल्लाते हुए वह अगल बगल के घरों के सामने माता की प्रतीक्षा करने लगी।

गाँव की उस महिला को अपने घर में रखकर मीना तंग आ चुकी थी। गाँव का जीवन कुछ और है। नगर में तो कोई आसपास के पडोसी के बारे में जानता तक नहीं है। अपने काम से मतलब रखकर अपने ही घर में सिमटे रहनेवालों के बीच में बहुत कम लोग आसपास के घरवालों से बात कर पाते हैं। ज्यादातर लोगों को पता भी नहीं है कि अपना पडोसी कौन है ? क्या करता है ? कैसे रहता है ? उसकी भाशा और वेशभूषा के बारे में भी कुछ पता नहीं चलता है। मीना की माँ अपने आसपास के सब लोगों के साथ बहुत ही प्यार भरा व्यवहार करती थी। उनके घरों में जाकर उनका कुशल मंगल पूछ लेती थी। उनसे बहुत ही आदर सम्मान पाती भी थी। अपनी बेटी की आवाज सुनकर वह पडोस से बाहर आयी।

मीना इतना चिल्ला क्यों रही हो ? तुम कहीं नहीं जाती। न किसी के सुख दुख से तुम्हें कोई लेन–देन नहीं है। मैं ऐसे रह नहीं सकती। मुझे चार पाँच लोगों से बात करनी है। उनके सुख–दुख में साथ देना है। पता है इस दुनिया में हम अकेले आये थे। लेकिन जान लो जब हम इस दुनिया को छोडेंगे तब हमारे लिए आँसू बहाने के लिए कम से कम सैकडों लोग चाहिए। वही जीने का फल है। तेरे जैसे अकेले रहकर अकेले मर मिटने के लिए मैं जनमी नहीं हूँ। अब बता चिल्ला क्यों रही थी ? बात क्या है। माता के चुप हो जाने पर मीना बोली – चित्रा घर आ गयी है। सालों पहले उससे

मुलाकात हुई थी । मैं उससे मिलने जा रही हूँ । आप आ रही हो क्या ? मीना का हाथ पकडकर माँ चित्रा के घर की तरफ चलने लगी ।

चित्रा घर आ गयी थी । लेकिन उसके घर में कोई जश्न नहीं मना रहे थे । उसके बूढे माता और पिता दुखी ही नजर आ रहे थे । चित्रा के साथ उसकी तीन साल की बेटी आयी थी । बेटी नहीं परी लग रही थी । उसे देखते ही मीना की अम्मा खिल गयी थी । उसे अपने गोद में लेकर बिठाकर कहने लगी – परी है मेरी ! कितनी प्यारी बच्ची है । थू थू थू नजर न लग जावें । क्या नाम है तेरा मेरी बिठिया रानी । बच्चे के गालों को थपथपाते हुए वह पूछने लगी । गुंजन नाम है मेरा । कैसा है मेरा नाम ? बडी प्यारी हँसी के साथ स्पष्ट आवाज में उत्तर देने लगी थी वह गुडिया । तुम्हारी माँ कहाँ है ? माँ अंदर है । पापा से लडकर आयी है । अब हम यहीं रहेंगे । बडी ही मधुर स्वर में सबकुछ बता दी गुंजन ।

बच्ची के पास थोडी देर रुककर चित्रा की माँ के पास मीना और उसकी माँ दोनों गयीं । मीना की माँ को देखते ही चित्रा की माँ की आँखों से आँसू निकलने लगे । मीना की माता को गले लगाकर वह कहने लगी – पाँच साल पहले हम दोनों से कहे बिना घर छोडकर वह अपने प्रेमी के साथ शादी कर चली गयी । कहाँ गयी यह पता चलने में हमें दस दिन लग गये थे । हम यह सोचकर चुप रहे कि कम से कम वह उसके साथ सुखमय जीवन बितावें । अब पाँच साल में शादी तोडकर बच्ची सहित वापस आ गयी है । पाँच साल के पहले दिल टूट गया था । अब दिल चूर चूर हो चुका है । क्या क्या देखना पड रहा है । जोर जोर से रोने लगी चित्रा की माँ ।

उसको सांत्वना देती हुई मीना की माँ बोली – आजकल की कुछ लडकियों का सही चित्र दर्शा रही है हमारी बेटी चित्रा । जब ये लडकियाँ प्यार में गिरती है तब कुछ सोचती नहीं है । शादी के बाद लड लडकर रिश्ता तोड लेती है । आज की पीढी की यह दशा समाज की दुर्दशा है । माँ रो रही थी । चित्रा अपने बालों के साथ गालों को सजाने में लगी हुई थी । मीना को पता नहीं उसे क्या करना है ? वह गुंजन के पास आकर बैठ गयी । वह गुंजन को कुछ समझाना चाहती थी लेकिन चुप रही ।



कहानी

पश्चाताप के आँसू

– श्री. निलेश जोशी 'विनायका',
पाली, राजस्थान

सुनंदा ने अपनी कच्ची उम्र से लेकर बुढ़ापे तक की यात्रा अपने पति के साथ की । दोनों बहुत खुश थे । एक दूसरे का बहुत ख्याल रखते थे । उनके पास पुश्तैनी जागीर थी इसलिए किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत कभी नहीं पड़ी । दोनों बेटे परदेस में कमाने लगे । यहाँ दोनों आराम से गुजारा कर लेते और बचाया हुआ दोनों बेटों में बांट दिया करते थे । दोनों पति पत्नी के प्रेम की आस पास के गाँव में चर्चा होती थी । वे कभी कभार शहर की ओर को आते लेकिन दोनों साथ साथ । मानों एक के बिना दूसरा अधूरा था । दोनों एक ही गाड़ी के दो पहिए थे । एक के बिना दूसरे के अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी । धीरे धीरे समय के साथ उम्र का पड़ाव आया । पति बीमार रहने लगा । छोटी मोटी दवा दारू से वह ठीक तो हो जाता परंतु सुनंदा को चिंता सताने लगी । इनके चले जाने के बाद मेरा क्या होगा । मेरी देखभाल कौन करेगा । ऐसे बहुत सारे प्रश्न थे जो उसे अंदर ही अंदर खाए जा रहे थे । पति ने उसके चेहरे को पढ़ लिया और वह समझ गया था कि उसे किस बात की चिंता हो रही है । उसने उसे कह रखा था कि मेरे बाद तेरी देखभाल तेरा बड़ा बेटा ही करेगा । मेरे बाद तू उसके पास चली जाना छोटे का कोई भरोसा नहीं है । वह तो अपनी जोरू का गुलाम बन बैठा है । परंतु माँ छोटे बेटे को ही अधिक स्नेह करती थी और उसे बहुत चाहती थी ।

एक दिन ऐसा भी आया जब उसका पति उसे यहाँ अकेला छोड़कर दूसरी दुनिया में चला गया । अब अकेली हो गई थी । उसकी दुनिया ही खत्म हो गई । अब वह किसके सहारे जीवित रहेगी । पिता की मृत्यु पर दोनों बेटे ने माँ को सांत्वना दी । 13वी का सारा काम निपटाया । पूरे गाँव को भोज दिया । सारे मेहमानों के चले जाने के बाद सुनंदा पुनः अकेलापन महसूस करने लगी । उसे चिंता थी कि अब मैं किसके साथ रहूँगी । छोटा बेटा मीठी मीठी बातों में फँसा कर माँ को अपने साथ शहर ले गया । अपने घर लाकर उसने माँ की खूब सेवा की । खाने पीने में कोई कसर ना रखी । सुनंदा उसके झांसे में आ गई । उसे अपने पति द्वारा कही बात खोटी लगने लगी । बेटे में उसे श्रवण का रूप दिखने लगा । अब

आश्वस्त हो गई थी । उसने यह निश्चय कर लिया कि वह छोटे के पास ही रहेगी । वह निश्चिंत होकर ईश्वर के भजन करती और सेवा पूजा में अपना दिन व्यतीत करती ।

चार 6 महीने बीतने के बाद एक दिन बेटा अपनी माँ के पास आया और कहने लगा कि माँ अब गाँव में क्या धरा है । तुझे तो यही रहना है । वहाँ घर की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं है । वहाँ बैंक में पड़े रुपयों पैसों का हिसाब भी कौन रखेगा । खेत खलिहानों का ध्यान भी कौन रखेगा । माँ ने बस बेटे की बातों में आ गई । बेटे की बात उसे सही लगी और दोनों वहाँ का निपटारा करने के लिए दोनों गाँव आ गए । पिता द्वारा बचत की हुई सारी संपत्ति और रुपया पैसा लेकर पुनः दोनों शहर आ गए । जब सारा रुपया पैसा हाथ में आ गया उसके बाद बेटे बहू ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया । माँ को अपने से अलग मकान दिला दिया । उस पर खर्च की गई पाई पाई का हिसाब रखा जाने लगा । वह बेचारी इन सब बातों से बेखबर थी । अपने बेटे द्वारा पीठ पीछे जो षड्यंत्र किया जा रहा था उससे अनजान सुनंदा उसे दुआएँ दे रही थी । अपने स्वर्गवासी पति को दोष दे रही थी कि व्यर्थ ही इस पर क्रोध करते थे । उसे भला-बुरा कहते थे । मेरा लाल कितना दयालु और सेवाभावी है । आज्ञाकारी है । माँ का कितना ख्याल रखता है ।

लगभग 12-महीने बीत जाने के बाद एक दिन बेटा अपनी माँ के पास जाकर कहता है, माँ अब मेरे पास कुछ नहीं बचा है । गाँव से तू जो रुपया पैसा वगैरह लाई थी वह सब तुम पर खर्च हो चुका है । अचानक ऐसी बात सुनकर माँ समझ नहीं पाई कि बेटा क्या कह रहा है । माँ ने उसे पुनः ठीक से समझा कर बताने के लिए कहा । तो उसने समझाया कि अब उस पर खर्च करने करने को बचा ही क्या है जो अब शहर में रहेगी । बेटे के मुँह से ऐसी बात सुनते ही वह जोर जोर से रोने लगी । उसे सारी बात समझ में आ गई थी । बेटा हाथ में सारा हिसाब लिए खड़ा खड़ा अपनी माँ का तमाशा देख रहा था । सुनंदा को अपने पति द्वारा कही बात याद आ रही थी । उसे चारों ओर घोर अंधकार नजर आने लगा । उसे अपने किए पर पश्चाताप हो रहा था । किंतु समय हाथ से निकल चुका था । अब उसके हाथ में क्या था जो वह कुछ कर सके।आखिर बेटे ने सारा हिसाब उसके सामने रख कर कहा कि तू जितना रुपया पैसा लाई थी वह सब तुम पर खर्च हो चुका है । उसी का यह हिसाब है । उस हिसाबी पत्र में सुनंदा पर खर्च की गई हर छोटी-मोटी चीजों की कीमत लिखी थी । वह विवश थी । उसके पैरों तले धरती खिसक रही थी । आँखों के सामने घोर अंधेरा छा गया । चारों दिशाएँ घूमती हुई नजर आने लगी । बार-बार उसे अपने पति का चेहरा याद आ रहा था ।

अब उसे अपने बड़े बेटे की याद आई । उसने छोटे से कहा, अगर तुम मुझे अपने पास नहीं रख सकता तो बड़े के पास छोड़ आ । वह ठूँठ की भांति खड़ा-खड़ा सब सुन रहा था परंतु चोर की भांति माँ से नजर नहीं मिला पा रहा था । उसे अपनी आत्मा धिक्कार रही थी । मन ग्लानि से भर गया था । शर्म से पानी पानी हो रहा था । परंतु वह कदम आगे बढ़ा चुका था और अपनी पत्नी के सामने उसकी एक ना चलती । आखिर उसे भी तो घर में रहना था । उसने सोचा किस मुँह से अपनी माँ को लेकर जाएगा । बड़े को अपना मुँह कैसे दिखाएगा । छोटे की पत्नी उसकी इस कमजोरी से वाकिफ थी । सासु को भेजने का उसने पूरा इंतजाम पहले से ही कर रखा था । वह उसे लेकर अपने जेठ के घर यह कहकर छोड़ आई कि इसने तो हमें परेशान कर दिया है । हमारी जिंदगी नरक बन गई है । इसे हम और बर्दाश्त नहीं कर सकते । इसके बेटे ने परेशान होकर इस से रिश्ता ही तोड़ दिया । यह तो मैं भले घर की थी कि इसे लेकर यहाँ छोड़ने आ गई हूँ । सुनंदा अपने आपको कूढ़ती हुई कातर नजरों से उसे देख रही थी । उसकी आँखों में क्रोध, दया और पश्चाताप के आँसू थे ।



कविता

एकता में बल है

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

एकता में बल है, सुरक्षित कल है,
एकता है तो, हर प्रयास सफल है ।
गुलामी का कोई खतरा नहीं होता,
हर किसी का भविष्य उज्ज्वल है ।
एकता में बल है...

साथ हैं तो खड़े हैं, बंटे तो गिरेंगे,
यह विचार अचल और अटल है ।
भारत का इतिहास भी कहता है,
मिली आजादी एकता का फल है ।
एकता में बल है...

एकता के आगे पत्थर भी मोम है,
हर एक कांटा, नरम मखमल है ।
इजरायल एक अच्छा उदाहरण है,
विभाजन एक जानलेवा दलदल है ।
एकता में बल है...

पहले भारत को मुगलों ने धोया है,
फिर अंग्रेजों ने किया बड़ा छल है ।
इन दोनों ने हमें आपस में लड़ाया,
फिर खड़ा किया सत्ता का महल है ।
एकता में बल है...

हमारी टूट का अंजाम ही गुलामी है,
एकता के आगे हर शक्ति विफल है ।
एक चींटी ने हाथी पर राज किया है,
कहानी पुरानी है, फिर भी हलचल है ।
एकता में बल है...



उसका घर

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

मम्मी जी, हम लोग ऑफिस जा रहे हैं, गेट बंद कर लीजिए । बिट्टू को दवाई दे दी है, अभी उसे बुखार नहीं है कहते हुए कविता, सुरेश के साथ ऑफिस के लिए निकल गई । मम्मी पापा के जाते ही बिट्टू ने बाहर जाकर खेलने की जिद पकड़ ली पर दादाजी ने शाम को घूमाने ले जाने का वादा करते हुए उसे कैरम खेलने के लिए बैठा लिया ।

अचानक उन्हें बाहर से कुछ अजीब सी आवाज सुनाई दी । दादाजी ने खिड़की से बाहर झांका तो जड़ हो गए । घर के अहाते में तेंदुआ ऐसे टहल रहा था जैसे उसे घर की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया हो । बीच–बीच में हुँकार भरी गर्जना भी कर रहा था । इस नई बसी कॉलोनी के बाकी घरों में भी दहशत से शोर शराबा होने लगा । दादाजी ने सुरेश को फोन कर तेंदुए की सूचना दी । तभी तेंदुआ दीवार फांद कर सड़क पर निकल गया लेकिन सामने से जीप को आता देखकर वह फिर से घर के अहाते में आ गया और दहाड़ने लगा । उसकी तेज दहाड़ के कारण सबकी रूह कांप गई । अब तक वन विभाग की टीम आ चुकी थी । दादाजी, तेंदुआ हमारे घर और कॉलोनी में क्यों आ गया, ये तो जंगल में रहता है ना डरे हुए बिट्टू ने पूछा । बेटा, ये हमारे घर या कॉलोनी में नहीं आया है बल्कि हमने इसके जंगल पर कब्जा कर कॉलोनी बना ली है । यह तो बस अपना वही घर ढूँढता हुआ आया है जहाँ ये पहले रहा और घूमा करता था । गलती उसकी नहीं हमारी है जो हम उसका घर उजाड़ कर विकास का दम भर रहे हैं व्यथित दादाजी ने समझाया ।

हे कृष्ण अगर तुमको दूर जाना है,
तो बताओ क्यों जीना है ?



खड़ीबोली हिन्दी के पहले कवि- 'हरिऔध' जी

(15 अप्रैल जयंती/6 मार्च पुण्यतिथि के अवसर पर)

– श्री. तरुण कुमार दाधीच, उदयपुर, राजस्थान

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की काव्य साधना का हिन्दी साहित्य में विशिष्ठ स्थान है । आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से प्रभावित हो कर आपने 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य की रचना की । यह महाकाव्य हिन्दी खड़ीबोली का पहला अतुकांत महाकाव्य है आपके काव्य ग्रंथों में श्रीकृष्ण कहीं ब्रह्म के रूप में और कहीं कहीं साधारण मानव के रूप में अंकित हुए हैं ।

'प्रिय प्रवास' हिन्दी साहित्य की अमर कृति है । उसका एक एक पद अनूठा है । कृष्ण की शोभा का एक उन्मादकारी चित्रण द्रष्टव्य है –

'कुसुम–शोभित गोरज बीच से,
निकलते ब्रजवल्लभ यों लसे ।
कदन ज्यों कर वर्धित कालिमा,
विकसता नभ में नलिनीश है ।

आपने 'प्रिय–प्रवास' को आधुनिकता की कसौटी पर कसा है । उसमें समाज सेवा, स्वार्थी त्याग, विश्व प्रेम, परोपकार, देश सेवा आदि उदात्त वृत्तियों का संदेश है ।

राधा 'प्रिय प्रवास' के कथानक की नायिका है । वे कृष्ण के शरीर की आत्मा है और समस्त क्रिया कलापों की केंद्र बिंदु है । शैशव से यौवनावस्था में आते ही राधा अपूर्व किशोरी हो जाती है । दोनों एक दूसरे में एकाकार हो जाते हैं । राधा, कृष्ण की प्रेमिका है, प्रेम पात्री नहीं । कृष्ण के विरह ने उन्हें त्यागी तथा लोकसेवी बना दिया है ।

आपने गद्य और पद्य दोनों में लिखा है । 'वैदेही वनवास' आपकी उच्च कोटि की रचना है । काव्य संग्रह में 'चौखे चौपदे', 'चुभते चौपदे', 'बोलचाल', 'रसकलस', 'पद्य प्रसून', 'कल्पलता', 'पारिजात', 'काव्योपवन', 'प्रेम पुष्पोपहार' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । गद्य में

आपकी 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' सुंदर रचनाएँ हैं ।

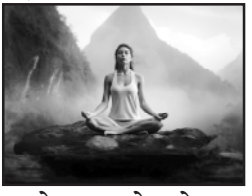
हरिऔध जी ने स्वयं अपनी शैली निर्धारित की । उन पर किसी का प्रभाव नहीं है । 'प्रिय प्रवास' की शैली अनूठी है । हरिऔध जी भाषा के पंडित थे क्योंकि उन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों को ब्रज भाषा के साँचे में ढालकर मधुर बना दिया । उन्होंने भाषा को एक नया रूप दिया । सही अर्थों में देखा जाय तो हरिऔध जी हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न हैं । हिन्दी साहित्य जगत सदैव उनका ऋणी रहने के साथ ही उन्हें हिन्दी खड़ीबोली के प्रथम काव्यकार के रूप में याद करता रहेगा ।

मौन अभिव्यक्ति

-श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु



मौन नि:शब्द मन की एक मूक भाषा,
परिस्थिति पर निर्भर जिसकी परिभाषा,
कभी स्वीकृत पथ बढ़ा शांति की ओर,
या तूफानों के आने का गुपचुप शोर ।



मौन प्रति उत्तर उन प्रश्नों का संक्षिप्त,
जब मन न चाहे होना प्रसंग में संलिप्त,
वातावरण जहाँ हो क्लेशमय व क्लिष्ट,
मौन वहाँ इंगित करता दृश्य उत्कृष्ट ।

मौन खोज अपने को पहचानने की,
दृष्टिकोण गूढ़ रहस्य को जानने की,
मौन को हर कोई न समझ सकता,
कहीं पर आनंद कहीं मन तड़पता ।





मौन कभी बन कारण तोड़ता संबंध,
मौन कभी जोड़ता ईश्वर से अनुबंध,
मौन कभी हिम्मत बन साथ निभाता,
कभी ये जिंदगी को रूखा कर जाता ।

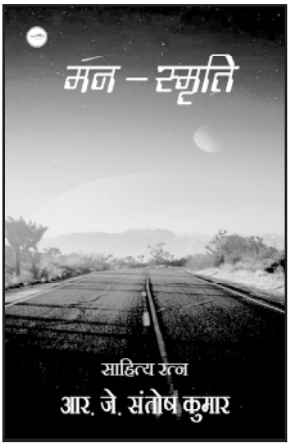
मौन कभी मजबूरी कभी है जरूरी,
कमजोरी बने, कभी हो धैर्य की डोरी,
मौन है कला सबके बस की बात नहीं,
मौन का रूप हो चेतना, चित्कार नहीं ।





'मन स्मृति' एक संवेदनात्मक दस्तावेज

– डॉ. कुँवर संजय विक्रम सिंह,
कोवै, तमिलनाडु



'मन स्मृति' कवि आर.जे. संतोष कुमार का कविता संग्रह है । इस संग्रह में लगभग 25 कविताएँ संग्रहीत हैं । इस संग्रह की सभी कविताओं को ध्यान से देखें तो स्पष्ट है कि कवि ने परम्परा में मौजूद अपनी उन स्मृतियों को बड़े गहराई से याद किया है जो आज के बदले परिवेश में प्रासंगिक हो उठीं हैं । वर्तमान समाज में तकनीकी और बाजार के अतिरेक से भागम भाग और स्वार्थपरता ने इतनी गहराई से अपना प्रसार किया है कि मानवीय संबंधों का ह्रास हुआ है । आपसी रिश्ते टूट रहे हैं । व्यक्तियों के कई चेहरे सामने आ रहे हैं । हर संवेदनशील मनुष्य इन परिस्थितियों से चिन्तित है । कवि संतोष भी इन परिस्थितियों से गहरे से प्रभावित हैं और कहीं न कहीं उन्होंने अपनी कविताओं में अपनी चिंता व्यक्त की है । 'अब से' कविता लगभग इन्हीं चिंताओं की अभिव्यक्ति जान पड़ती है । कविता की पंक्तियाँ उद्धृत हैं –

जब हम कभी किसी से भी मिलने जाते/हाल पूछते सस्नेह/बहु सारे यह नाम के वास्ते करते हैं ।

कविता की ये पंक्तियाँ उसी दिखावे की संस्कृति को एवं संवेदना के ह्रास को प्रकट करती हैं । पारिवारिक रिश्तों और संबंधों में आयी कमी को भी कवि कवि महसूस करता है और आज की पीढ़ी से पारिवारिक प्रेम को बनाए रखने की अपील भी करता है । कवि की 'परिवार से प्यार कर' शीर्षक से लिखी कविता इसी बात का परिचायक है । मान लो, कभी तो सोचा करो,

खुद से तो डर, आत्म का आदर कर आदि कविताएँ इसी बात का परिचायक हैं कि कवि एक प्रेरक कवि के रूप में हमारे सामने मौजूद है जो इस भागम भाग, ओर संवेदनहीन हो रही दुनिया से हमें बचाने का प्रयास कर है ओर साथ ही स्मृतियों के उदाहरणों से समाज को आगाह भी करता है कि हमें अपनी परम्परा के सार्थक अंशों से सीखने की जरूरत है ।

कोई भी बड़ा कवि बड़ा तब बनता है जब उसके वृन प्रक्रिया में उसका अपना परिवेश जाने अनजाने उपस्थित हो और कवि संतोष के यहाँ उनका अपना निजी परिवेश बखूबी उद्धृत हुआ है । 'क्यों करती हो' कविता में कविता ने स्वाद का अद्भुत चित्रण किया है जिसमें खट्टे के लिए वे लिखते हैं – इमली का क्या बोलूँ / खट्टापन का पूरा सामाज्य वही है ।

इस तरह का चित्रण उनके अपने लोक को प्रस्तुत करता है । समाज के यथार्थ का चित्रण कवि संतोष ने बड़ी निडरता से प्रस्तुत किया है । वर्तमान समय में जहाँ निजी लाभ हेतु सत्ता प्रतिष्ठानों साठ गांठ कर अधिकांश कविताएँ रची जा रही हैं ऐसे समय में संतोष जी उन कवियों के पंक्ति में हैं जो यथार्थ चित्रण का रास्ता नहीं छोड़ते बल्कि परिस्थितियों का सामना कर निडरता से अपनी रचनात्मकता को बढ़ा रहे हैं । कवि संतोष की कविता के मुख्य विषय समाजिक चेतना का यथार्थ, प्रेम, संवेदना, नैतिकता, लोक जीवन का यथार्थ आदि हैं । इनकी सभी कविताओं में ऐसे प्रेरक तत्व मौजूद हैं जो जन सामान्य को प्रेरित करते हैं । अतीत के गौरवमयी क्षणों को याद करते हुए उसे वर्तमान से जोड़कर नए आयाम में प्रस्तुत करनेवाले कवि हैं संतोष । करना क्या है और उड़ान कविता इसी भाव भूमि को प्रस्तुत करती हुई कविता है ।

काव्य संग्रह 'मन स्मृति' की लगभग सभी कविताएँ जन साधारण को आकर्षित करती हैं उन्हें प्रेरित करती हैं और उनका मार्ग प्रशस्त करती हैं अतः ये सभी कविताएँ वर्तमान समय और समाज में ही नहीं बल्कि कालान्तर में भी प्रासंगिक बनी रहेंगी यह कहना सर्वथा उचित है । इन सभी कविताओं का भाव ओर शिल्प दोनों इतना विशेष है कि ये कविताएँ कवि आर.जे. संतोष जी को उन कवियों की पंक्ति में खड़ा करती हैं जिन्हें खूब पढ़े जाने की जरूरत है ।



स्वानुभूतिः शरारतों के उस्ताद बंदरों का ठेला प्रेम

– श्री. त्रिभुवन लाल साहू,
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

भिलाई स्टील प्लांट के भीतर विशेषकर पी बी एस में बंदरों की धमाचौकड़ी हमेशा मची रहती है । उनकी दुनिया शरारत और अनुशासन का ऐसा अनोखा मिश्रण है, जिसे देखकर कभी हँसी आती है, तो कभी हैरानी होती है । सबसे दिलचस्प नज़ारा तब देखने को मिलता है जब वे कुत्तों के साथ खेलते हैं । कभी किसी कुत्ते की पूँछ खींच लेते हैं, तो कभी अचानक कूदकर उसे चौंका देते हैं । लेकिन मज़े की बात यह है कि वे अपनी चपलता और फुर्ती से खुद को पकड़ने का पूरा मौका भी देते हैं, मानो कोई रोमांचक खेल खेल रहे हों । फिर भी, जब कुत्ते झपटते हैं, तो बंदर इतनी तेजी से फुर्र हो जाते हैं कि उनकी पकड़ में आना नामुमकिन ही लगता है–ठीक वैसे ही जैसे बिल्ली को कुत्ते शायद ही कभी पकड़ पाते हैं ।

पर बंदरों की असली समझदारी तब देखने को मिलती है जब वे भोजन की तलाश में ठेले के पास पहुँचते हैं । वे किसी मासूम बच्चे की तरह लोगों के चेहरे ताकते हैं, मानो बिना बोले ही खाने की गुजारिश कर रहे हों । और यह भी तय है कि कोई न कोई दयालु व्यक्ति उन्हें बिस्किट या कुछ खाने को दे ही देता है । यह दृश्य देखने में न केवल मज़ेदार बल्कि भावनात्मक भी होता है । कभी–कभी तो वे ठेले के काउंटर तक भी चढ़ जाते हैं, लेकिन उनकी खासियत यह होती है कि वे अनुशासन नहीं भूलते बिना किसी सामान को छुए बस चुपचाप इंतजार करते हैं कि कोई उन्हें कुछ खाने को दे । यही समझदारी और धैर्य उन्हें बाकी जीवों से अलग बनाता है, मानो वे भी मनुष्य के करीब आ रहे हों ।

लेकिन यह दृश्य जितना मनोरंजक लगता है, उतना ही हमें सोचने पर भी मजबूर करता है । अक्सर हम यह मानते हैं कि बंदर हमें नुकसान पहुँचा सकते

हैं, लेकिन क्या वास्तव में उनकी कोई गलती है ? नहीं ! इसके लिए कहीं न कहीं हम ही ज़िम्मेदार हैं । हमने जंगलों को काटकर उनके प्राकृतिक आवास को नष्ट कर दिये है, जिससे उन्हें भोजन और पानी की तलाश में मानव बस्तियों की ओर आना पड़ता है । आखिर भूख तो सबको लगती है, पेट की आग किसी को भी विवश कर सकती है । मनुष्य भी जब भूखा होता है, तो चोरी करने से नहीं हिचकिचाता, फिर ये तो बेचारे बंदर हैं ! बंदरों की सबसे रोचक बात यह है कि वे अपने स्वभाव में शरारती होते हुए भी ठेले के पास एक अनोखी सभ्यता का परिचय देते हैं । कई बार वे खाने के लिए हाथ बढ़ाते हैं, झपटने का प्रयास भी करते हैं, लेकिन फिर भी उनकी हरकतें किसी नुकसान की भावना से परे होती हैं । उनकी शरारतें हमें हंसाती हैं, उनकी मासूमियत दिल को छू जाती है ।



शिव रात

चौपाई आधारित

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार

झूमते शिवगण; शिव भवानी ।
लगती है शिव रात सुहानी ।।
घर–आँगन मंदिर सब सजते ।
भजन–कीर्तन सभी मिल करते ।।
शिव गौरी की निकले झांकी ।
नर–नारी सब घुर–घुर ताकी ।।
ढोल–झाल, मंजीरा बाजे ।
रथ पर शिव–पार्वती विराजे ।।
शिव का डमरू डम–डम बाजे ।
शंख ध्वनि आकाश में साजे ।।
महादेव का जयकार लगे ।
जगत कल्याण का भाव जगे ।।
शिव शंकर का नित ध्यान धरें ।
जीवन पथ के सब शूल हरें ।।
आशुतोष हैं औढ़रदानी ।
जो माँगे देते वरदानी ।।

वंदना : माँ सरस्वती

माँ ! हंसवाहिनी; वीणावादिनी,
वाणी; बोध यश वरदायिनी ।
सुर–ताल; लय शब्द गागर दे,
वर दे, माँ सरस्वती वर दे ।।
कमल; पीत आसन विराजिनी,
श्वेत वस्त्र; शुभ ज्ञानदायिनी ।
नेह रस; रुचि–राग; सर दे,
वर दे, माँ सरस्वती वर दे ।।
तू वेद भारती; राष्ट्र स्वामिनी,
कविगण माँ, संत मंगलकारिणी ।
कंठ; सुर–लय छद भर दे,
वर दे, माँ सरस्वती वर दे ।।

कवि हूँ मैं

– डॉ. परमानन्द लाभ,
समस्तीपुर, बिहार

कवि हूँ मैं
कविता की रचना धर्म है मेरा
पर कुछ नहीं लिख सका
कभी तुम्हारे लिए ।
मत समझना तुम कि मैंने भुला दिया
निभाना, जो धर्म है मेरा
मन में भाव कलम में स्याही
थी मगर, पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
लड़ा खूब अपनों से मन–ही–मन
तेरे मोहते आनन वो चंचल नयन
जुलुम ढाती मुस्की को शब्दों में सजाने की
लालसा थी बड़ी,
पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
मेरी कविता के हर पद गुदगुदाते जो रहते,
जिंदगी भर तुम्हें हँसाते जो रहते,
कविता के संग, उफ् मेरे साथ रहती,
पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
यदि मेरी रचना में तेरी फोटो जो होती
मैं ढूढ़ लेता उसे, आवाज दे कर बुला लेता तुम्हें
मिल लेता अपनी कविता में प्रिये,
सुख मिलता अपार उसमें प्रिये,
पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
तू जाने–न–जाने या माने–न–माने

सच है यही, लेकर अरमां बैठा दफे कई
मसि कागद वो कलम लेकर सही
कविता ही क्यों, रच दूँगा ग्रंथ अभी
और तेरे हाथों में दूँगा प्रेमोपहार अभी,
पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
क्या कहूँ अब मैं 'तुमसे प्रिये
होती यदि आज सामने तू
कहे बिना मेरी विवशता समझ जाती जो तू
पर कुछ नहीं लिख सका कभी तुम्हारे लिए ।
मेरे ऊहापोह संशय के बीच
खो गया मेरा ख्वाब, सौख–कल्पना मेरी
धरी रह गई मुरादें, जली अरमाँ की चिताएँ
'लाभ' रचता कौन–सी कविता तुम्हारे लिए,
इसीलिए तो कहता हूँ, कवि हूँ,
पर कुछ लिख नहीं सका कभी तुम्हारे लिए ।।



अनिश्चित

– श्री. प्रेम कुमार
क्षत्री,
कोहिमा,नागालैण्ड

यह धरा ही नहीं
पूरे क़ायनात के सब कुछ
अनित्य ही है
उसमे भी
मानव जीवन तो
पूर्णरूपेण क्षणभंगुरता से भरा
पल में क्या हो
निश्चित नहीं है
कोई तो अपनी उपलब्धि
ओहदे से सदा मगरूर रहता ऐसे
जैसे जमीन पर पैर ही न हो
निम्न वर्गों को
मानव ही नही समझता
सुख दुख का मनन नही करता
डंडा कैसे बरसे उस पर
कैसे उसकी क्षति हो
तरकीब यही लगाता
जबकि तथ्य उसे
पता ही है क्षणिक,

ऋतुराज वसन्त

– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.



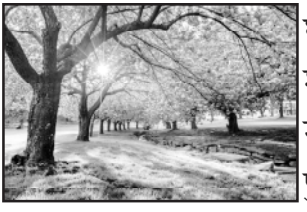
ठण्ड से राहत मिली, मधुऋतु धरा पर छा गई ।
गोद में ले गन्ध मीठी, झूमती-सी आ गई ।
झूमते मदमत्त हो सब, प्यार मधुऋतु से करें,
कर रहे स्वागत सभी, यह ऋतु सभी को भा गई ।।



मत्त इस मधुमास का, स्वागत गगन भी कर रहा ।
साथ ले मादक पवन, यह मन सभी का हर रहा ।
चेतना सबकी जगी, मानस सुमनवत् खिल गये,
यह मधुर मधुमास तो, नव जोश मन में भर रहा ।।

आ गया मधुमास तो, अलिवृन्द मँडराने लगे ।
जा तितलियों के निकट, मुख चूम बतियाने लगे ।
षट्पदों के कान में, कुछ तो तितलियों ने कहा,
प्रीति उनकी देखकर, रस पुष्प छलकाने लगे ।।





घने पातों में छिपे, खग निज प्रिया से मिल रहे ।
शीत के दो मास तक, बेचैन उनके दिल रहे ।
मत्त मारुत प्रेम-रस, परिवेश में बरसा रहा,
पुष्प भी आराम में, आराम से हैं खिल रहे ।।

पीत पुष्पों से लदी, है हो रही सरसों मगन ।
प्यार में उन्मत्त हो, झकझोरता उसको पवन ।
बालियाँ गोधूम की, ताने उसे हैं मारती,
देख उनकी हरक़तें हैं, चकित जंतुमती गगन ।।





कामिनी है सोचती, क्यों प्राणधन आये नहीं ?
क्या खबर ऋतुराज की, वे अब तलक पाये नहीं ?
क्या कहूँ, किससे कहूँ, कैसे कहूँ कितना कहूँ ?
कंत बिन शिशिरान्त में, सखि ! अब रहा जाये

कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा

रचना – श्री. राजेंद्र चौहान,
वडोदरा, गुजरात



काश मैं कान्हा के गोकुल का निवासी होता ।
या तो नंदगाँव की गलियों की मैं धूली होता ।

या तो बहती हुई यमुना का किनारा होता ।
या तो श्यामल सी नदी का मैं तो पानी होता ।
काश मैं कान्हा के...

श्याम रंगों में रंगा मैं तो गुवाला होता ।
जिसपे खेला वो कंदब उसका मैं शाखी होता ।
काश मैं कान्हा के...



या तो मटकी में भरा हुआ माखन होता ।
या तो आंगन में रखी दही की मथानी होता
काश मैं कान्हा के...

या तो नंदगांव में रहता कोई यादव होता ।
या मैं बरसाने की सुंदर सी पहाड़ी होता ।
काश मैं कान्हा के...

या तो मैं मोर का इक पंख सुनहरा होता ।
जिसने पाया उसे मैं श्याम की गोपी होता ।
काश मैं कान्हा के...



रास के रंग का उस रात नजारा होता ।
और बंशी की मधुर तान सुरीली होता ।
काश मैं कान्हा के...

आधुनिक द्वंद्व

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद',
प्रयागराज, उ.प्र.



प्रभु सुमिरन के पथ पर, पाओ सच्ची राह,
सत्य, करुणा, प्रेम ही, जीवन का उन्नाह ।
फूलों की महक में छुपा, है प्रभु का आभास,
जीवन की हर साँस में, बसा प्रेम-विलास ।
नदी बहती निर्बाध सी, सिखलाए ये बात,
कठिनाई चाहे जितनी, रखना सहज प्रवाह ।
भारतीय संस्कृति में, गूँज रहा संसार,
रीति-रिवाज और कला, अनमोल उपहार ।
नृत्य में वह लय बसी, रंगों में अभिराम,
कला से उन्नति करे, भारत का हर धाम ।
सोचों की गहराई में, मिलता ज्ञान अपार,
खोजें जो अंतर्मन को, पायें प्रेम-संसार ।
अहंकार के मोह में, खोई मानव जात,
भौतिकता के पीछे दौड़े, भूले प्रभु-प्रभात ।
आधुनिकता के ताने में, बुन रहा जो स्वप्न,
भटका उस पथ पर, छूट गया जो अपना अपन ।
पर्वतों की ऊँचाई, सिखलाए हर हाल,
कठिनाइयों को जीतकर, पाओ ऊँचा बाल ।
प्रकृति से सीखा मन ने, सुख-दुःख का संवाद,
संतोष में बसा यहाँ, जीवन का आधार ।
भारतीय संस्कृति सदा, रही सत्य का सार,
पूजा में है प्रेम का, वह अक्षुण्ण विचार ।
मन पागल हो दौड़ता, हर क्षण की तलाश,
मोह माया की रेत में, खो देता विश्वास ।
गुरु-ज्ञान की संगत में, मिलती है नव राह,
आत्मा का उजला सच, लेता जीवन चाह ।
रंगों से सजी कला, बनती जीवन मीत,
शब्दों में रस घोलकर, कविता बाँधें गीत ।
आधुनिकता की होड़ में, छूटा मानवधर्म,
प्रेम, अहिंसा खो गए, रह गई सिर्फ कर्म ।
प्रकृति के हर रंग में, छिपी सजीवता,
सच्चे प्रेम के सूत्र से, हो जीवन सघनता ।



मजदूर

– श्री. दिनेश कुमार,
चेन्नै, तमिलनाडु

जिम्मेदारियों का बोझ बचपन से वो उठायेगा
घर–परिवार छोड़ अपना विदेश में कमायेगा
पता नहीं खुद दो जून की रोटी खा भी पाता है ?
बेटा परिवार की खातिर मौत को गले लगाता है ।

कल्पना से इतर भी वह काम क्या क्या करता है
पैसे वह भेज पाए घर इसलिए रोज–2 मरता है
बहन के शादी की चिंता उसे सउदीअरब ले जाती है
सेठों की डांट, ठेकेदार की मार भी सह जाती है

सेठ वीजा लेते छीन हाड़तोड़ मजदूरी करवाता है
अनपढ़ होकर भी वह दूतावास चक्कर लगाता है
ये मलेशिया, दुबई, बहरीन, कतर में फंस जाता है
माँ–बाप, बहन का दुलारा वहाँ हँसकर मर जाता है

थोड़ी इज्जत करो उसकी वह आपका ही लाल है
स्वार्थी मत बना करो उसके शरीर में भी खाल है
बड़े–2 टावर बनानेवाले को झुग्गी तक नसीब नहीं
सरकार की नजरों में तो वह होता साबित गरीब नहीं

लेखनी उनके दर्द बयाँ करते करते ही रुक जाएगी
पैसेवालों का रवैया मजदूरों से, साँसे रुक जाएँगी
ये मजदूर, लेबर, दिहाड़ी उनके शरीर में भी जान है
देश के निर्माता मजदूरों नमन, भारत माता की शान हैं ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN

Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

& 0427-4265414 0427-4552100

Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in www.shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books and exam fee :

Name of the Exam	Fees	Name of the Exam	Fees
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00	Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00	Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00	Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00	Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

How to pay the examination fee ?

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

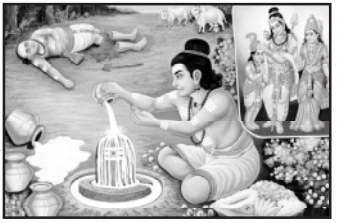


महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

चंडेश्वर नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

चोल राज्य का एक नहीं अनेकानेक है विशेष
आज भी है चोल राजाओं की कीर्ति बन अशेष
अति प्राचीन अति संपन्न भाषा है मधुर तमिल
अति मधुर तमिल अपनाकर राज्य किये चोल
सीमा पार कर दुनिया भर तमिल की थी कीर्ति
राज करना प्रजा की रक्षा करना चोल जानते थे
चोल राजाओं की गरिमा दुनिया तब जानती थी
चोल राज्य का महान शहर है तिरुच्चेयज्ञलूर ।





सूर पद्मादि राक्षसों का वध कर गये कार्त्तिकेय
मण्णि नदी के किनारे बनाये वे एक मंदिर विशेष
अपने हाथ से शिव लिंग का किये वे स्थापित
अपने पिता महेश्वर की पूजा किये वे वहाँ पर
सुर नर सब उस मंदिर में सिर नमाते भक्ति भर
पुण्य स्थान बन चमक रहा है अब भी तिरुच्चेयज्ञलूर
एच्चदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था इस शहर पर
पत्नी पतिव्रता थी नाम था उस नारी का पवित्रा ।
एच्चदत्त और पवित्रा का संतान हुआ था सविवेक
जन्म से जलता दिया सा प्रकाश मान रहा बालक
सात साल की उम्र में यज्ञोपवित किया गया उसका
पूर्व जन्म के सुकर्म के बल पर चमकने लगा बालक
सारे मंत्र आते थे उसे विशेष रूप से कोई नहीं सम
सब कुछ करता मन वह भरता दिव्य ठहरता चेहरा
एक दिन देखा उसने गायों को मार रहा था बालक
उस दिन से ले जाने लगा गायों को चराने यह बालक ।



विचारसर्म नाम था उस बालक का बडा भक्त था
सबसे अनुमति लेकर गायों को चराने ले जाता था
प्यार भरसाने लगे गाय सारे उसपर वही नेता था
एक जीव जो दूध दही घी सब कुछ देता हे मानव को
एक प्रधान चीज भस्म बनता है गाय के गोबर से
भक्त मन को जानकर गाय उससे करते थे प्यार
उसके साथ जब चरने जाते चर लेते वे भर पेट नित
उसका प्यार अपनाकर दूध बरसाते वे सुबह व शाम ।

गायों को चरने छोडकर मंदिर बनाता था वह बालक
शिव लिंग उसे बनाकर करता था पूजा पुष्प लाकर
शिव भक्ति में रमने लगी तब वहाँ की सारी गायें
दूध बरसाने लगे सब मिलकर पूजा करने लगा बालक
एक दिन दूर से देख लिया एक मानव घटनाऐं सारी
दूध को नदी सा बहते हुए देखकर वह कृद्ध हो गया
एच्चदत्त से मिलकर बता दिया उसने सारी बात तभी
सब कुछ जानकर एच्चदत्त ने कर लिया तब एक उपाय ।



अपने बेटे के पीछे छुप छुपकर गया एच्चदत्त नदी तक
अपने बेटे पर गुस्सा किया दूध की नदी बहाते देखकर
भक्त मन कुछ नहीं जानता भक्ति में वह तल्लीन था
घडे पर लात मारकर जब पिता ने दूध सारे नीचे गिराया
अपने आपको रोक नहीं पाया वार किया उसपर लाडी लेकर
लाडी बन गयी कुल्हाडी कट गया पैर गिर गया एच्चदत्त
आये शिव महेश्वरी सहित चंडेश्वर पद दिये बालक को तब
पिता भी स्वर्ग पाये अपने पुत्र का दिया दंड को अपनाकर ।

शिव महिमा सदा महान, मन यह तुम नित जान ।
शिव को भज शिव में मिले, चंडेश्वर पद सहित ।।

हाइकु

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.



– 1 –
जीने का ढंग
बदलता ही रहा
पीढ़ी के संग

– 2 –
नयी पीढ़ियाँ
तोड़ती परम्परा
ओढती भ्रम

– 3 –
बिसर गया
पिछला इतिहास
पहचान क्या

– 4 –
उठ जाती है
रिश्ते बीच दीवार
स्वार्थ के आते

– 5 –
शेष निशान
समय की रबड़
मिटाती घाव

– 6 –
दुःख के क्षण
याद आता आँचल
जो ओढ़ाती माँ

– 7 –
तलाश रहे
कंकरीट वन में
कोई आदमी

– 8 –
पाती पढ़ते
पाखी बनके मन
उड़ना चाहे

– 9 –
कोई लाचारी
जो आस्तीन में सांप
पाले रहती

– 10 –
पिंजड़ा पाखी
पंख फड़फड़ाता
उदास होता

– 11 –
हताश होता
किश्तों में बटा पाता
जीवन गाथा

– 12 –
सीने में दबा
स्वयं से मिला दर्द
सालता सदा

– 13 –
आँखों का नीर
जीवन की सच्चाई
व्यक्त करता

– 14 –
वृक्ष न होते
हम सभ्य न होते
वस्त्र न होते

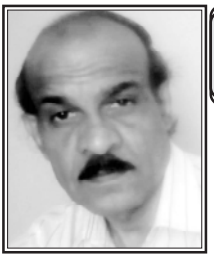
– 15 –
कहा रूका है
प्रदूषण दानव
वृक्ष के पास

– 16 –
पीड़ा का नीर
धरती पर गिर
बनता क्षार

– 17 –
अंकित हुआ
वेदना का प्रभाव
दर्पण पर

– 18 –
विश्वास भरे
अपलक नयन
देखती राह

– 19 –
राह खोजता
स्मृतियों का सूरज
वर्तमान में



ग़ज़लें

– श्री. नवीन
माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

राह वही अब चाल नई है ।
मंज़िल की पड़ताल नई है ।
माँगें सालों–साल पुरानी,
उनपर बस हड़ताल नई है ।
मुमक़िन है बच जाना उसका,
हाथों में अब ढ़ाल नई है ।
बजता है सुरताल में फिर से,
अब तबले की खाल नई है ।
ख़ुश है आज शिकारी ख़ुद से,
उसने डाली जाल नई है ।
संभल–संभल कर चढ़ना ऊपर,
जो ऊँची है ड़ाल नई है ।

– 2 –

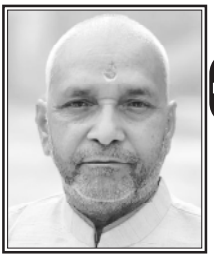
आना जाना रहता है ।
जब पहचाना रहता है ।
दिल जितना उतना उसके,
साथ ज़माना रहता है ।
जब तक सेहत है अच्छी,
पीना–खाना रहता है ।
सपना ही चाहे थोड़ा,
मन समझाना रहता है ।
खो जाता है मिलकर जो,
वो अफ़साना रहता है ।

– 3 –

आइना जो क़माल रखता है ।
शक़्ल की देखभाल रखता है ।
ये जताती हैं सलवटें रुख़ की,
कौन कितना मलाल रखता है ।
होंठ ख़ामोश उसके रहते हैं,
जो नज़र में सवाल रखता है ।
चाहता है जिसे कभी दिल से,
वो उसी का ख़्याल रखता है ।
फ़िक्र रखता है जो इरादों की,
बात अपनी बहाल रखता हैं ।

– 4 –

खोना–पाना लिख देते हो ।
हाल–ज़माना लिख देते हो ।
लिखकर बातें सारी अपनी,
सच बेगाना लिख देते हो ।
अल्फ़ाज़ों से बुन जीवन का,
ताना–बाना लिख देते हो ।
सच जतलाकर सपनों के सब,
मन समझाना लिख देते हो ।
मुश्क़िल या आसां तुम सबका,
आबो–दाना लिख देते हो ।
शाम–सुबह,सुख–दुःख दोनों का,
आना–जाना लिख देते हो ।



दो कविताएँ

होली

– डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन',
झाँसी, उ.प्र.

मैं होली में होली तेरी हरि होली में ।

तन मन धन सब तुझ पर वारू ।
तुझको ही बस सदा निहारू ।।
मन ही मन तेरे पांव पखारू ।
जीवन भर बस तुम्हें सम्भारू ।।
तेरी वाणी है अनमोली हरि होली में ।

तुमने ही यह जग उपजाया ।
कार्य कर रही तेरी माया ।।
जिन पर आप करो प्रभु दाया ।
उनको तुम्हारा भजन भाया ।।
अंत: की आँखें खोली हरि होली में ।

मैं तो रंग गई श्याम के रंग में ।
मिल जाता है श्याम ही मग में ।।
यह समा गया मेरी रग रग में ।
मैं देखूँ छवि मुंदरी के नग में ।।
मैं रस में परवस भई हरि होली में ।

मेरे हृदयासन आ जाओ ।
अन्दर के सब दोष मिटाओ ।।
मुझको सदा सदा अपनाओ ।
मुझसे दूर नहीं तुम जाओ ।।
मक्खन मन की भव पीर हरि होली में ।

गोरी खौ होरी मन भावै

– डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन',
झाँसी, उ.प्र.

गोरी खौ होरी मन भावै ।
वौ दौर दौर मो नौ आवै ।।

आकै मेय टटोले गाल, उ पै मलती लाल गुलाल, छूने से हो जाऊ निहाल ।
मुस्का कै मुखड़ा मटकावै ।
गोरी खौ होरी मन भावै ।।

साल भरे मै आई होली, रंग दै मोरी साड़ी चोली, नैन चला कै मो से बोली ।
उम्दा मौका न कड़व जावै ।
गोरी खौ होरी मन भावै ।।

पिचकारी मोरी थी भारी, मैंने ऊ के ताई पसारी, नींद खुली जब चीखी प्यारी ।
जागे पै मन मोरौ पछतावै ।
गोरी खौ होरी मन भावै ।।

जो सपने मैं मौरे आई, आज तलक लौ ढूँढ़ी भाई, लेकिन अब तक न मिल पाई ।
पावे खौ मन मोरो ललचावे ।
गोरी खौ होरी मन भावै ।।



ग़ज़लें

– डॉ. राकेश जोशी,
देहरादून, उत्तराखंड

– 1 –

तेरी दावत में गर खाना नहीं था
तुझे तंबू भी लगवाना नहीं था
मेरा कुरता पुराना हो गया है
मुझे महफ़िल में यूँ आना नहीं था
इमारत में लगा लेता उसे मैं
मुझे पत्थर से टकराना नहीं था
ये मेरा था सफ़र, मैंने चुना था
मुझे काँटों से घबराना नहीं था
समझ लेता मैं ख़ुद ही बात उसकी
मुझे उसको तो समझाना नहीं था
तुझे राजा बना देते कभी का
मगर अफ़सोस ! तू काना नहीं था
छुपाते हम कहाँ पर आँसुओं को
वहाँ कोई भी तहख़ाना नहीं था
मुहब्बत तो इबादत थी किसी दिन
फ़क़त जी का ही बहलाना नहीं था
जहाँ पर युद्ध में शामिल थे सारे
वहाँ तुमको भी घबराना नहीं था

– 2 –

ख़ंजर को ख़ंजर कहना है
ऐसा अब अक्सर कहना है
सहमे-सहमे, डरे हुए हो
डर को भी अब डर कहना है
शीशों के इस शहर में आकर
पत्थर को पत्थर कहना है
खेतों में हल लेकर निकलो
बंजर को बंजर कहना है
जंगल में तुम सबको जाकर
बंदर को बंदर कहना है
सर्दी के ही मौसम में तो
बेघर को बेघर कहना है
अजब चलन है नए शहर का
ज़ालिम को भी 'सर' कहना है

– 3 –

कल ज़मीं पर आज-से दंगल नहीं थे
आज जो भी हैं सफ़र में, कल नहीं थे
देखकर ये खुश हुआ मन, क्यारियों में
ढेर-सारी सब्ज़ियाँ थीं, फल नहीं थे
आज बस्ती में कहीं पानी नहीं है
कल तो पानी था मगर कल नल नहीं थे
थी सड़क चौड़ी बहुत, पर रास्ते में
वो पुराने पेड़, वो जंगल नहीं थे
फिर मरे कुछ लोग सर्दी में वहाँ कल
क्या तुम्हारे देश में कंबल नहीं थे
जिस क़दर लोगों की थीं मजबूरियाँ कुछ
उस क़दर आकाश पर बादल नहीं थे
पाँव में छाले सभी के थे हज़ारों
पर किसी के ख़्वाब तो घायल नहीं थे
आज रौनक आ गई खेतों में फिर से
खेत तो कल भी थे लेकिन हल नहीं थे
ख़ूब-सारा वक़्त था औरों की ख़ातिर
बस, हमारे वास्ते कुछ पल नहीं थे



रणनीति

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

चुनाव में खड़े थे प्रत्याशी चार,
जीतना है सबको नहीं चाहिए हार,
चूंकि प्रतिद्वंद्वी थे तो
मिलकर नहीं किये विचार,
करना था एक दूजे पर प्रहार,
पहले ने समर्थक वोटरों को गिना,
कम पड़ रहे थे समर्थक
तो कैसे जाएगा जीत छीना,
योजना के तहत जाल बिछाया गया,
फ्रेम में पांचवा प्रत्याशी लाया गया,
जिसने द्वितीय उम्मीदवार के समर्थकों में
अच्छा खासा पैसा बांट डाला,
उनकी हिम्मत को काट डाला,
दूसरे को पता नहीं कि
रणनीति के तहत फोड़ा गया है बम,
उसके सारे मतदाता खा पी
नाच रहे झमाझम,
पहले का अपना वोटर बच गया,
दूसरे का वोटर पांचवे द्वारा कट गया,
रणनीतियां ही करती है काम
ईमानदार हो चाहे मूर्ख,
हमेशा सफल रहते हैं चालबाज धूर्त ।



ऋतुराज बसन्त

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

कुसुम ठुमक कर नर्तन करते,
तितली, भँवरों का मन हरते ।
कोमल कलिका भी मुस्काती,
कुछ सकुचाती, तनिक लजाती ।
अरुणिम कोमल कोपल डोलें,
कलियाँ फूलों से यूँ बोलें ।
झूम रही है डाली–डाली,
बासंती बयार मतवाली ।
दूब झुकी इसके वंदन को,
शुचि समीर के अभिनंदन को ।
विहग पेड़ पर, प्रमुदित गाते,
प्रकृति का आनंद उठाते ।
अमराई में कोयल डोले,
लो आया बसंत यह बोले ।
आम्रबौर की मादक गंध,
सुमनों की स्वर्गिक सुगंध ।
प्रिय अनुपम वासंती पवन,
चले सनन सन, सनन सनन ।
पुष्पों का उड़ता मकरंद,
इसीलिए ऋतुराज बसंत ।



महाकुंभ

– डॉ. निशा नंदिनी भारतीय,
तिनसुकिया, असम

कुंभ कहो, महाकुंभ कहो
शंभू–शंकर–स्वयंभू कहो,
पावन पवित्र प्रयागराज में
सत्य सनातन जय कहो ।

मिलन सरस्वती–गंगा–यमुना
निर्मल–दिव्य रूप छलकना,
त्रिवेणी–संगम पर्व पुनीता
शुद्ध कमल हृदय खिलना,
नमन कर प्रयागराज को
शिवशंकर को हरपल भजना ।
कुंभ कहो, महाकुंभ कहो
शंभू–शंकर–स्वयंभू कहो,
पावन–पवित्र प्रयागराज में
सत्य सनातन जय कहो ।

आस्था की डुबकी लगाना
मन का मैल धोकर जाना,
साधु–संतों की लिए ऊर्जा
वापस अपनी नगरी जाना,
आनंदित हो कर्म में लगना
स्मरण सदैव महाकुंभ रखना ।
कुंभ कहो, महाकुंभ कहो
शंभू–शंकर–स्वयंभू कहो,
पावन पवित्र प्रयागराज में
सत्य सनातन जय कहो ।

विशाल, विविधता का संगम
सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक,
सामाजिक एकता व सद्भाव
दान–पुण्य,धार्मिक अनुष्ठान,
खगोलीय घटनाओं से जुड़ा
पवित्र नदियों का अमृतस्नान ।
कुंभ कहो, महाकुंभ कहो
शंभू–शंकर–स्वयंभू कहो,
पावन पवित्र प्रयागराज में
सत्य सनातन जय कहो ।



बाल कविता

दो सहेलियाँ

– डॉ. अखिलेश शर्मा, इन्दौर, म.प्र.

अलबेली सीदोसखियाँ,
हंसकर करती हैं बतियाँ,
फूलों सी मुस्काती हैं,
बातें बहुत बनाती हैं ।
भोले चेहरे, मीठी बानी,
एक दूजे को कहें कहानी ।
स्कूल जातीं, खाना खातीं,
फिर होमवर्क निपटातीं ।
खेल–खिलौने इनको प्यारे,
खूब संभाल इनको संवारें ।
देखकर चंदा और सितारे,
निंदिया रानी इन्हें पुकारे ।

क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?



(कविता)

– डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद,
पटना, बिहार

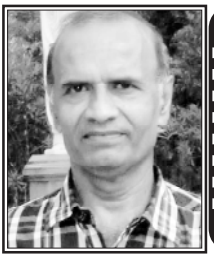
अवनि–अंबर मन के अंदर
हर साँस तुम्हारे होने का
क्यों लगता अनंत विस्तार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?
मेघों के रंगों में रंगकर
रूप पाश से वीचि भंग कर
हवा में अंगराग भरकर
तुम मेरे मानस के तट पर
छवि उकेरते हो प्रतिपल
क्यों लगता तेरा आकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?
जो कहा रुक–रुक पवन ने
जो कहा झुक झुक गगन ने
कुछ कहा नीरव स्वन ने
कुछ कहा उड़ती अगन ने
हर स्वप्न तेरा भाव बंध है
क्यों बींधना है, स्वीकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?
समीर में उर का प्रकंपन
नेह में स्वर लहरी स्पंदन
राह बन गए, जैसे वन चंदन
अश्रु में भी उजला निमंत्रण
बिन माँगे तुमने दे डाला
क्यों स्निग्ध का पारावार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?
रोके न रुके जीवन की आस
बढ़ती जाती अब संचित प्यास
पल भर न मिले कोई अवकाश
रचने को चले हम–तुम इतिहास
क्षण में सारे अभिमान वार
क्यों शांत, अविराम पुकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे ?



देखो नटखट बंदर आया है

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

देखो नटखट बंदर आया है
जमके उछल कूद मचाया है
कभी आँखें लाल दिखाता है
तो कभी वह दाँत दिखाता है
फिर पेड़ पे वह चढ़ जाता है
यहाँ–वहाँ छलांग, लगाता है
पके–पके फल वह खाता है
कच्चे फल को छोड़ जाता है
बच्चों को खूब मजा आता है
चारो तरफ धूम मच जाता है



सत्य से मुलाकात करें ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

आओ सभी बैठकर बात करें ।
जीवन की उलझनों से दूर,
हंसते हुए भरपूर,
एक दूसरे के विचारों को,
सुनें आत्मसात करें ।
दुनियाँ की हलचल न सुनाई दे ।
घृणा की रोशनी न दिखाई दे ।
इस कोलाहल भरे जीवन में,
आओ शांति पाने का प्रयास करें ।
उच्च विचारों की ओढ़नी ओढ़कर ।
मन को खुला न छोड़कर ।
आनन्द के बादलों की,
आओ अन्तस् में बरसात करें ।
प्रकाश के मार्ग पर चलते हुए ।
अंधेरों से बचते हुए ।
अपनी मंजिल की ओर चलकर,
आओ सत्य से मुलाकात करें ।

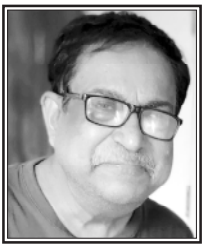
दिलों में प्यार भरो ।
सबसे प्यार करो ।



सबके हाथों है मोबाईल !

–श्री. राजेश पाठक,
गिरिडीह, झारखंड

पढ़ा–लिखा ना भले हो काबिल
सबके हाथों है मोबाईल !
करनी भी अब क्या तैयारी
मुट्ठी में दुनिया है सारी
हुआ वायरल जब कोई भी
बेमतलब की भीड़ में शामिल
पढ़ा–लिखा ना भले हो काबिल
सबके हाथों है मोबाईल !
हालत ऐसी बनी है सबकी
बदल चुकी है दुनिया कबकी
भले फोन से दुनिया देखो
कभी–कभी अपनों से जा मिल
पढ़ा–लिखा ना भले हो काबिल
सबके हाथों है मोबाईल !
कुछ पल तो डिटॉक्स ही रह कर
फोन बॉक्स में बंद ही रख कर
लगे न मन तो जॉक्स ही कह कर
बहला भी लेना अपना दिल
पढ़ा–लिखा ना भले हो काबिल
सबके हाथों है मोबाईल !



मस्ती की मनुहार

– श्री. महेंद्र कुमार वर्मा,
पुणे, महाराष्ट्र

लेकर प्रीत गुलाल,
आओ करें धमाल ।
मार रंग बौछार,
सबको करें निहाल ।
थिरक रहे रघुवीर,
दीनू और जमाल ।
टेसू वाले फूल,
इनके रंग कमाल ।
हरे गुलाबी लाल,
मस्ती करें गुलाल ।
मस्ती की मनुहार,
लाए रंग गुलाल ।
अगर लड़ोगे वीर,
होगा बड़ा बवाल ।
जो होली से डरे,
उनपे रंग उछाल ।
होली में हो जाए,
मस्ती भरा धमाल ।



प्रतीक्षा करने की कला

– श्री. मोहित.जे. संतोष,
श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

जैसे तूफ़ान के बाद जो सुकून
वैसे मिलेगा तुम्हें तेरा जुनून
जैसे गरमी के बाद की बारिश
वैसे पूरी होगी तुम्हारी ख्वाहिश ।

यह गुण है अति खास
जो नहीं हर किसी के पास
जो करता है इसका प्रयास
सफलता और सम्मान उसके पास ।

जीवन यह है एक परीक्षा
उसमें प्रमुख है हाँ प्रतीक्षा
इंतजार करना है एक कला
इंतजार करने से होता है भला ।

क्षण का नहीं है यह समय लगता
गुणों में सबसे है यह ठहरता महान
करते रहो तुम मिथवा प्रतीक्षा
करो सबसे पहले अपने आपपर भरोसा ।

पानी सा बने रहो मीठा भी रहो खारा भी
मृदुल भी रहो कभी बनो कठोर बस चलते रहो
चलते रहो ।



भेड़ों के झुंड से निकला मैं

– श्री. अमन रंगेला 'अमन' सनातनी,
नागपुर, महाराष्ट्र

की भेड़ों के झुंड में चल रहा था
तो अंधा हो गया था,
गोबर से सने आदमी को गले
लगा लिया था, इसलिए मै गंदा हो गया था
मैं अब अपने सपनों को पूरा करता हूँ
और अपने आप को खुश रखता हूँ ।
मैं अब अपने जीवन को जीता हूँ
और अपने आप को गर्व से भरता हूँ ।
मैंने अपने जीवन को बदल दिया है
और अपने आप को नया बनाया है ।
मैं अब अपने रास्ते पर चलता हूँ
और अपने आप को नया बनाता हूँ ।
भेड़ों के झुंड में चलनेवाला मैं
अब अपने आप को पहचानता हूँ ।
गोवर से सने आदमी की बातों से
मैंने अपने आप को मुक्त कर लिया हूँ ।
मैं अब अपने अनुभवों से सीखता हूँ
और अपने आप को मजबूत बनाता हूँ ।
मैं अब अपने जीवन को नया अर्थ देता हूँ
और अपने आप को नया रूप देता हूँ ।
मैं अब अपने जीवन को जीता हूँ
और अपने आप को खुश रखता हूँ ।
मैं अब अपने सपनों को पूरा करता हूँ
और अपने आप को गर्व से भरता हूँ ।



जीता है देश दिल्ली हो विशेष...!

– श्री. संजय एम तराणेकर, इन्दौर, म.प्र.

यारों दिल्ली को झाड़ू की नहीं,
वेक्यूम क्लिनर की जरूरत थी ।
ये सत्ताईस साल का सूखा था,
लोकसभा जीतते रहे दुखा था ।
मुफ्त का निवाला जो फेंका था,
उसका स्वाद बड़ा ही रूखा था ।
यारों दिल्ली को झाड़ू की नहीं,
वेक्यूम क्लिनर की जरूरत थी ।
दिल्लीवालों ने 11 साल देखा था,
कुछ–2 मीठा था, बाद में खट्टा था ।
उस गले में मफलर का पट्टा था,
शीशमहल व शराब का बट्टा था ।
यारों दिल्ली को झाड़ू की नहीं,
वेक्यूम क्लिनर की जरूरत थी ।
यमुना के मन में खूब गुस्सा था,
पूर्वांचलियों को बड़ा अखरता था ।
अब उन्हें खड़ाऊ न था स्वीकार,
झाड़ू बिखरकर हो गई है बेकार ।
यारों दिल्ली को झाड़ू की नहीं,
वेक्यूम क्लिनर की जरूरत थी ।
अब सीएम हाउस में नया प्रवेश,
राज्य का दर्जा दिलवाओं रमेश ।
करना वादे पूरे न रहें अब शेष,
जीता है देश दिल्ली हो विशेष ।



जीवन

– डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया,
ग्वालियर, म.प्र.

जीवन कांटों भरा सफर है
सीधी सादी नहीं डगर है ।
पैसा कम अरु काम बहुत है
प्रवचनों का नहीं असर है ।
धन–दौलत से भरे कुयें हैं
जबकि कोई नहीं अमर है ।
पापा–मम्मी गये काम पर
बच्चों की कुछ नहीं खबर है ।
निर्धनता का राज बहुत है
खाने को भी नहीं जहर है ।
मेहनत करते बूढ़े हो गये
दिखती उनकी नहीं कमर है ।
चिंता ही चिंता है घर में
बिन चिंता का पहर नहीं है ।



बारिश बनें

– श्री. सौम्या,
कोवै, तमिलनाडु

हर मन में भरा है उदास
हर मन बन पडा है रेगिस्तान
हम बनें बारिश जो लायें खुशियाँ
सपने सब सूख गये
खुशियाँ सारी मर गयी
दिल के इस रेगिस्तान में
भरोसा भी मुरझा गया
बारिश बन भरें उस मन को
जो सूखा पडा रहे दर्द भरा
हर चेहरे पर खुशियाँ भरे
हर मन में भर दें हम संतोष
चलो बनें हम वह बादल
जो आराम दे हर मन को
जहाँ भी हम जावें
उस जगह को आनंद से भर पावें ।

வாணி விகாஸ் தேர்வு

ஏப்ரல்-2025 முதல் தேர்வு கட்டண விபரம்

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00



लक्ष्य

– श्री. गीता राठौर 'गीत',
पीलीभीत, उ.प्र.

रुकना नहीं पथिक राहों में
लक्ष्य को अपने पाना है
अंगारे हों या हो पत्थर
आगे बढ़ते जाना है

तपता सूर्य कभी न थकता
जग में करता उजियारा
लक्ष्य सूर्य का भी होता है
मिट जाता सब अंधियारा

लक्ष्य में कितने ही बाधक हों
किंचित न तुम घबराना
कंटक जाल बिछा हो फिर भी
आगे ही बढ़ते जाना

कांटों के पश्चात मिलेगी
पुष्पों की सुंदर क्यारी
इतने में ही भ्रमित न होना
रखना है मेहनत जारी

अंतिम चरण फलों का पाकर
लक्ष्य सुसज्जित होगा
उस दिन ही जन–जन में तेरा
नाम सुशोभित होगा



शबरी शिक्षा समाचार फ़रवरी 2025 अंक की प्रति प्राप्त हुई । यह पत्रिका चूँकि हिन्दी भाषा में तमिलनाडु से प्रकाशित होती है इसलिए इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है । हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए आप सभी इतनी मेहनत कर रहे हैं और पत्रिका को सुरुचिपूर्ण तरीक़े से प्रस्तुत कर रहें हैं, इसका विशेष श्रेय आप सभी को जाता है ।

आशा है 'शबरी शिक्षा समाचार' इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति करेगी और देश में हिन्दी भाषा को उचित सम्मान दिलाने में पूर्णतय: सहायक होगी । धन्यवाद ।

– डा. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

बहुत सुंदर पत्रिका और वर्षों से तमिलनाडु में हिन्दी की अलख जगा रखने के लिए साधूवाद । – श्री. ममता तिवारी 'ममता',
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

अहिन्दी भाषी क्षेत्र से एक सुन्दर साहित्यक मासिक पत्रिका, शबरी का निरन्तर प्रकाशित होना निसंदेह आपके अद्वितीय सम्पादन विवेक एवं कौशल का प्रतीक है । आप और आपका सहयोगी समूह सभी अजस्र बधाई के पात्र हैं । शुभाकांक्षी

– प्रो. डॉ. रामगोपाल सिंह बघेल,
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, भारत

नवांकुर



खुशियाँ

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

खुशियाँ जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । जब ये होती हैं तो मन और जिंदगी को खुश रखती हैं । जब ये नहीं होती हैं तो, ऐसा लगता है कि जिंदगी में अंधेरा छा गया है । तब हम बहुत दुखी होते हैं और हम ऐसा सोचते हैं कि भगवान हमें कभी खुशियाँ देते ही नहीं । यह इंसान का स्वभाव है । कभी-कभी जब हमारी हालत खराब होती है तो हम सोचते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों होता है । किन्तु हम यह नहीं सोचते कि भगवान ने हमें कितनी खुशियाँ दी हैं, सिर्फ यही सोचते हैं कि भगवान ने हमें कितना दुख दिया है । हमेशा खुश रहने से जिंदगी सुखमय होगी । इसीलिए हमेशा खुशियों के बारे में सोचना चाहिए और दुख को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए ।



सकरात्मक रहो

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

जीवन यह दुर्लभ है
परेशानियों से भरा है
जिन्दगी नीरस है
जिन्दगी रंग भरी भी है
हार मानने को मन करता है
हारनेवाला भी हार नहीं मानता है ।

अपने सपनों के पीछे दौडें
जीवन बचाने के लिए भागें
अपने परिवार के लिए दौडें
अपने समय के लिए दौडें
अपने जीत के लिए दौडें
अपने समाज के लिए दौडें ।

अपना समय आ चुका है
चलो अब खुशियाँ मनावें
आशावादी हम बन जावें
प्यार फैलाकर खुशियाँ मनावें
सकरात्मक बन हम अब सबमें
आशा के नवकिरण नित जगावें ।

नवांकुर– रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

वेतनं किम् ?

बङ्गाल राज्यस्य एकस्मिन् लघु रेलस्थानके एकः रेलयानः स्थगितवान् । सुवेषधारी, सुरुचिपूर्णः एकः युवकः ''भारिक, भारिक'' इति आह्वयत् ।

तत्र कोऽपि भारिकः न आसीत् । अतः सः इतस्ततः परितः पश्यति स्म । तस्य समीपे गुरुः सामानः नासीत्, केवलं लघु सूटकेसः एव आसीत् । ग्रामरेलस्थानके भारिकः कुतः प्राप्नुयाम् ?

अथ कश्चित् मध्यमवयस्कः ग्रामवासी कुमारस्य समीपं गतः । युवकः तं भारिक इति मत्वा 'भवन्तः सर्वे महा आलसाः सन्ति । कियत्कालं यावत् अहं आक्रोशं कुर्वन् अस्मि ?... म् एतत् वहतु, चलतु च ।

सः मध्यवयस्कः पुरुषः पेटीम् आदाय मौनम् चलितवान् । यदा तौ गृहं प्राप्तवन्तौ तदा युवकः तान् पेटीम् अधः स्थापयितुं ऊचु । तदा सः वेतनं दातुं स्यूतात् धनं गृहीतवान् ।

सः पुरुषः ''धन्यवादः ! वेतनं दातुं आवश्यकता नास्ति'' इत्युक्तवान् ।

युवकः आश्चर्येन पृष्टवान् 'किमर्थम् वेतनम् अस्वीकरोषि' इति ।

तदानीं गृहात् बहिरागतः युवकस्य ज्येष्ठ भ्राता तं पुरुषं दृष्ट्वा तं प्राणम्य महता उत्साहेन स्वागतं कृतवान् ।

युवकः ज्येष्ठ भ्रातरं प्रति ''कः अयं ?'' किमर्थं भवान् तं अभिवादनं स्वागतं च करोति'' इति पृष्टवान् ।

भ्रातुः वचनं श्रुत्वा सः अतीव आततिं अनुभूतवान् यत् तस्य पेटीवाहकः बङ्गालदेशस्य प्रसिद्धः विद्वान् ईश्वरचन्द्रविद्यासागरः । सद्य एव सः विद्यासागरस्य पादयोः पतित्वा क्षमायाचनाम् आकारोत् ।

यत् मम देशस्य जनाः आत्मश्लाघां त्यक्त्वा स्वहस्तेन स्वकार्यं करणं गौरवपूर्णमित्यवगन्तुं अर्हन्ति । ततःपरं ते स्वपाददृये तिष्ठेयुः, अर्थात् आत्मनिर्भरः भवेयु : एतत् वेतनं एव अहं याचयामि' इति विद्यासागरःअवदत्

विद्यासागर महोदयस्य आदरं कर्तुं प्रत्येकस्य भारतीयस्य कर्तव्यं भवति ।

தமிழமுது – தெய்வம் இகழேல்

– எம். ஸ்ரீதர், நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித இனம் தோன்றி காலங்கள் பல கடந்து விட்டன. விலங்குடன் விலங்காக ஆடையின்றி திரிந்த மனிதன் ஆடை அலங்காரத்தோடு நாகரீக வளர்ச்சி பெற்று இன்று நவீன யுகத்தில் தனக்குத்தான் நிகர் என்று ஆணவம் கொண்டு அலைந்து திரிகிறான். சூரியனையும், சந்திரனையும், நதியையும், மழையையும், கடலையும் தெய்வமாகக்கருதி இயற்கையை வணங்கி வந்த மனிதன் பின் நாட்களில் இறைவனை அறிந்து இறைவனின் உருவ வழிபாடுகளையும் தொடங்கி வைத்தான். இறை நம்பிக்கையானது மனிதனின் வாழ்க்கையை வரைமுறைக்குள் கட்டி வைத்திருந்தது. பாவம் புண்ணியம் தன்னுடைய செயல்களை ஒரு முறைக்கு இருமுறை ஆலோசித்து செயல்பட வைத்திருந்தது. நாணயம், நம்பிக்கை என்ற பெயர்களில் மனிதனிடம் மனிதம் காணப்பட்டது. தெய்வம் தன்னை தண்டித்துவிடும். இறந்த பின் சொர்க்கத்திற்கு செல்லாமல் நரகத்திற்கு சென்றுவிடுவோம், தன் பழி பாவங்களுக்கு தான் மட்டுமல்ல தன்னுடைய குடும்ப உறுப்பினர்களும் ஆளாவார்கள் என்ற பயம் இருந்தபோது மனிதன் நல்லவனாக நடித்துக் கொண்டாவது இருந்தான்.

அறிவியல் வளர்ச்சி பெற்று இயற்கையை தனக்கு கீழே கொண்டுவரும் முயற்சியில் ஈடுபட்ட மனிதன் தெய்வ நம்பிக்கையில் இருந்து சற்று விலகிட தொடங்கினான். கடவுள் நம்பிக்கை கொண்டவர்கள் அனைவரும் மூடர் என்று நினைத்துக் கொண்டு இறைவனை விட்டுவிட்டு அறிவியலை தனது முதலாளி ஆக்கினான். விளைவு தெய்வத்தை இகழத் தொடங்கினான். கடவுளாவது கத்திரிக்காயாவது என்று தெய்வ நம்பிக்கை உள்ளவர்கள் காது படவே அவன் சொல்லத் தொடங்கினான். இறைவனை நம்பாதவன் எதையுமே நம்பாதவன். சமூகத்தையும் தனது குடும்பத்தைக் கூட விட்டு விட்டு தனது சுகங்களுக்கு மட்டுமே முன்னுரிமை கொடுப்பவனாக அவன் மெல்ல மெல்ல மாறிவிடுகிறான்.

காலம் கை கொடுக்கத் தொடங்கினால் கூட்டத்திற்குள் மெதுவாக சொல்ல வேண்டியதை கூட மிக மிக உயரிய குரலில் தெய்வத்தை இகழ்ந்து பேசத் தொடங்கி விடுகிறான்.

ஔவையார் தமிழ் மட்டுமல்ல தெய்வத்தின் சிறப்புகளையும் தெள்ளத் தெளிவாக அறிந்து தெளிந்தவர். ஒருமுக கடவுள் விநாயகரின் முழு அருள் பெற்ற ஔவையார் மனிதன் வாழ வேண்டிய வகைகளை மிக அருமையாக ஆத்திச்சூடியில் சொல்லிச் சென்று இருக்கிறார். மனிதன் தன் வாழ்வில் செய்ய வேண்டியது, செய்யக்கூடிய, செய்யக்கூடாததும் அனைத்தையும் மிக எளிய வடிவில் சொல்லிச் சென்றிருக்கிறார். மனித வாழ்வை மகத்தான வாழ்வாக மாற்ற வேண்டிய வழிமுறைகளை சொல்லிய அவர் **தெய்வம் இகழேல்** என்று தெளிவாக சொல்லி இருக்கிறார். ஒருபோதும் தெய்வத்தையும் மதம் சார்ந்த நல்ல விஷயங்களையும் பழிக்க கூடாது தெய்வத்திற்கு எதிராக பேசக்கூடாது என்று தெள்ளத் தெளிவாக சொல்லி சென்றிருக்கிறார். ஔவையின் வழியேற்று தெய்வத்தை இகழாமல் தேவையற்றதைப் புகழாமல் இறைவனை வணங்கி இதயத்தில் என்றென்றும் நல்லவைகளை மட்டும் நிரப்புவோம். நலம் பெற வாழ்வோம்.

தொடரும்...

அறிந்திடுக

உயர்வும் தாழ்வும் பிறப்பால் இல்லை
உணர்வும் செயலும் அதுவே எல்லை
எண்ணங்கள் சிறந்ததானால் எல்லாமே சிறந்ததாகும்
செயலில் தூய்மை சிறந்த வாழ்வை உருவாக்கும்
சிந்தையில் என்றென்றும் நல்லவை நிறைத்திடுவோம்
செயல்கள் ஒவ்வொன்றையும் சிறந்ததாக செய்திடுவோம்
என்னுடன் எல்லோரும் இன்புற்று இருக்க வேண்டும்
இந்த எண்ணம் உலகில் எல்லோருக்கும் வேண்டும்
நன்மைகள் வாழ்வில் ஒவ்வொரு நாளும் தோன்றும்
உலகம் இந்த உலகம் அன்று சொர்க்கமாக தோன்றக்கூடும்.



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருக்கடவூர் வீரட்டம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



செவ்வழலாய் நிலனாகி நின
றசிவ மூர்த்தியும்
முவ்வழல் நான்மறை யைந்துமா
யமுனி கேள்வனுநு
கவ்வழல் வாயக்கத நாகமார்த்
தான் கடவூர்தனுள்
வெவ்வழலேந்து கை வீரட்டா
னத்தர னல்லனே.

- ஸ்ரீ ஞானசம்சந்தர் அருளிய 3-ஆம் திருமுறை

சஷ்டியப்த பூர்த்தி, பீமரத சாந்தி, சாதபிஷேகம் என்றாலே நம் கண்முன் தோன்றும் அருட்தலம் திருக்கடையூர் ஸ்ரீ அபிராமி அம்பிகை ஸமேத ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வரர் திருத்தலம் ஆகும். ஆம், தற்போது திருக்கடையூர் என்று வழங்கப்படும் திருத்தலமே திருக்கடவூர் வீரட்டம் ஆகும். ஸ்ரீ சிவபெருமான் தீரச் செயல்களை விளையாட்டாகச் செய்து தமது பக்தர்களுக்கு அருள்பாலித்த அஷ்ட வீரஸ்தானத் தலங்களுள் யமனை உதைத்த இந்த திருக்கடவூர் வீரட்டமும் ஒன்றாகும்.

வில்வவனம், கடபுரி, கடவூர், பிஞ்சுலவனம், பிரமரந்திபுரம், புண்ணியவர்த்தனம், பாபவிமோசனப்பதி என்றெல்லாம் பலப்பல திருநாமங்களினால் சிறப்பிக்கப்படும் பெருமைக்கும் உரியது திருக்கடவூர் வீரட்டம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் படைப்புக்கடவுளான பிரம்மதேவர் ஸ்ரீ சிவபெருமானை வணங்கித் தமக்கு ஞான உபதேசம் அருள வேண்டினார். ஸ்ரீ சிவபெருமானும் ஒரு வில்வ விதையை பிரம்மதேவரிடம் கொடுத்து இந்த விதை எந்த இடத்தில் ஒரு நாழிகை (24 நிமிடம்) நேரத்திற்குள்ளாக துளிர்விட்டுச் செடியாக வளர்கிறதோ, அந்த இடத்தில் உமக்கு நாம் ஞானஉபதேசம் வழங்குவோம் என்றார்.

அதன்படியே பிரம்மா ஸ்ரீ சிவன் தந்த வில்வ விதையுடன் பலத் தலங்களில் வில்வ விதையைப் போட்டு முறைக்காலமல் நிறைவாக இந்தத் தலம் வந்தார். இங்கே வில்வ விதையைப் போட்டவுடன் ஈசன் குறிப்பிட்ட காலத்திற்குள் முளைத்துச் செடியானது. ஸ்ரீ சிவபெருமானும் ப்ரசன்னமாகி ஸ்ரீ பிரம்மதேவருக்கு அருளுபதேசம் செய்தார். ஆகையால் இவ்விடம் வில்வவனம் எனவும் பெயர் பெற்றது.

காலகாலர் :

இத்தலத்திற்கு அருகே மணல்மேடு என்ற பகுதியில் ம்ருகண்டு ரிஷி மனைவியுடன் வசித்து வந்தார். நீண்டகாலம் ஆகியும் சந்தானப்பேறு இல்லாததால் ஈசன் பதம் பணிந்தார். இறையருளால் ம்ருகண்டு தம்பதியினருக்கு 16 ஆண்டுகளே ஆயுள் கொண்ட அற்புதமான ஆண் குழந்தை பிறந்தது.

ரிஷி தம்பதியினர் அந்தக் குழந்தைக்கு மார்க்கண்டேயன் என பெயரிட்டு மிகுந்த மகிழ்ச்சியுடன் விதிப்படி செய்ய வேண்டியனவற்றை எல்லாம் முறைப்படி செய்து மகிழ்ந்தனர். ஆனாலும் மார்க்கண்டேயன் வயது ஏற ஏற ம்ருகண்டு தம்பதியினர் கவலையும் கூடியது.

பெற்றோரின் கவலைக்குக் காரணம் தமது ஆயுட்காலம் வெறும் 16 ஆண்டுகள் என்பதே என்பதை அறிந்த மார்க்கண்டேயர் சற்றும் கவலையின்றி, கவலைவேண்டாம் எனத் தமது பெற்றோருக்கு ஆறுதல் வார்த்தைகள் கூறிவிட்டுச் சிவாலயங்கள்தோறும் சென்று சிவனடி பணிந்தார்.

தமக்கு 16 வயது நிறைவுறும் தருவாயில் மார்க்கண்டேயர் இந்தத் தலம் வந்தார். அமிர்தகடேஷ்வரரை உள்ளம் உருக ப்ரார்த்தித்தார். அவரது ஆயுள் முடியும் நேரம் எம தூதர் வந்தனர். ஆனாலும் சிவபூஜையில் இருந்த மார்க்கண்டேயர் உயிரைப் பறிக்க வந்து முடியாமல் திரும்பினர். கடைசியில் எமனே வந்தான். மார்க்கண்டேயன் மீது தூர இருந்தே பாசக்கயிற்றை வீசினான். கயிறானது மார்க்கண்டேயனுடன் சிவலிங்கத் திருமேனியையும் சுற்றிக்கொண்டது. மார்க்கண்டேயனோடு சிவலிங்கத்தையும் சேர்த்து இழுத்தான்.

இதனால் கோபம் கொண்ட ஸ்ரீ சிவபெருமான் ப்ரத்யக்ஷமாகித் தமது இடக்காலால் எமனை உதைத்து வதைத்தார். மேலும் மார்க்கண்டேயன் என்றென்றும் இளமையுடன் சிரஞ்சீவியாக வாழ அருள்புரிந்தார்.

பக்தனுக்காக எமனைச் சம்ஹாரம் செய்ததால் இறைவன் காலசம்ஹார மூர்த்தி, காலகாலன் என்றெல்லாம் அழைக்கின்றோம்.

கடவூர் :

பாற்கடலில் இருந்து பெற்ற அமிர்தத்தை ஓர் புனிதமான இடத்தில்வைத்து எல்லோரும் உண்ண விரும்பினர். திருமால் அதற்கு ஏற்ற இடம் இந்தத் தலமே என்று கூற தேவர்கள் திருக்கடவூருக்கு அமிர்த கலசத்தைக் கொண்டுவந்து வைத்தனர். ஆகையால் இவ்வூர் கடவூர், கடபுரி என்றெல்லாம் அழைக்கப்பட்டது.

மேலும் எம பயத்தைக் கடக்க உதவும் பதியாகவும் இத்தலம் திகழ்வதால் கடவூர் என்று சிறப்பிக்கப்பட்டது.

புண்யாவர்தனபுரி :

புலஸ்தியர் என்ற ரிஷி இங்கு வந்து ஈசனை வணங்கித் தமது புண்யத்தைப் பெருக்கிக் கொண்டதால் இத்தலம் புண்யாவர்த்தன புலி என்றும் கூறப்படுகிறது.

பாபவிமோசனத் தலம் :

அகஸ்திய மஹரிஷி இங்கு வந்து வணங்கினார். அவரது பாவங்கள் அகன்றன. ஆகையால் இத்தலம் பாபவிமோசனத் தலம் என்ற பெயரும் பெற்றது.

பிஞ்சிலவனம் :

பிஞ்சிலம் என்றால் ஜாதிமல்லிக்கைப்பூ ஆகும். மார்க்கண்டேயர் காசியில் இருந்து கங்காதீர்த்தம் கொண்டுவந்து இத்தலத்து ஈசனுக்கு அபிஷேகம் செய்ததோடு அங்கிருந்து ஜாதிமல்லிகை மலர்களையும் கொணர்ந்து அர்ச்சித்தார். இன்றளவும் வருடம்முழுவதும் இங்கு ஈசனுக்கு ஜாதிமல்லிகை சாற்றப்படுகின்றது. அத்துடன் இப்பகுதியில் நிறைய ஜாதிமல்லிகைக் கொடிகள் இருந்ததால் பிஞ்சிலவனம் என்றும் அழைக்கப்பட்டது.

கள்ள வாரணப் பிள்ளையார் :

ஸ்ரீ சிவபெருமான் அருளால் தேவர்கள் திருமால் தலைமையில் இத்தலத்தில் அமிர்தகுடத்தைவைத்து அருந்த முற்பட்டபோது குடம் மறைந்தது. தேவர்கள் வருந்தினர். பிறகு முழுமுதற் கடவுளாம் மூஷிகவாஹனனை முதலில் வணங்காததே இதற்குக் காரணம் என அறிந்தனர். பிள்ளையாரிடம் மன்னிப்புக்கேட்டு அமிர்தகுடத்தைத் தந்தருளவேண்டினர். அமிர்த குடமும் வெளிப்பட்டது. தேவர் மகிழ்ந்தனர். இந்தப் பிள்ளையாரே கள்ள வாரணப் பிள்ளையார் எனச் செல்லமாக வணங்கப்படுகிறார்.

சிறப்புக்கள் :

1. ஸ்ரீ சிவபெருமான் தீரச்செயல்கள் புரிந்த எட்டுத் தலங்களுள் இதுவும் ஒன்றாகும்.

2. ஸ்ரீ குங்குலியக் கலய நாயனார், ஸ்ரீ காரிநாயனார் முதலானோர் திரு அவதாரம் செய்து சிவத்தொண்டு செய்த தலமும் இதுவே.
3. அமாவாசை தினத்தில் அபிராமி அம்மையை அருட்பதிகங்கலால் வணங்கி அன்றைய தினத்தில் பௌர்ணமி முழுநிலவை அபிராமி பட்டர் சரபோஜி மன்னனுக்குக் காட்டிய அற்புதத்தலம் இது.
4. அபிராமி அந்தாதி உதித்த தலமும் இதுவே.
5. ஸ்ரீ அப்பரும் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தரும் ஒருசேரவந்து அபிராமி அம்பினையையும் அமிர்தகடேஷ்வரரையும் வணங்கிப் பிறகு ஸ்ரீ குங்குலியக கலயநாயனார் திருமடத்தில் தங்கிய சிறப்பு வாய்ந்தது இத்தலம்.
6. தினமும் இறைவன் அபிஷேகத்திற்கு இத்தலத்தில் இருந்து சுமார் ஒரு கிலோ மீட்டர் தொலைவில் உள்ள திருக்கடவூர் மயானத்தில் இருந்து மாட்டுவண்டி மூலம் தீர்த்தம் கொண்டு வரப்படுகிறது.
7. பூமி பிராட்டியார் அருள்பெற்ற திருத்தலம்.
8. நீண்ட ஆயுளுடன் நிறைவாழ்வு வாழ சஷ்டியப்த பூர்த்தி, பீமரத சாந்தி, சதாபிஷேகம், ம்ருத்யுஞ்ஜய ஹோமம், ஆயுஷ்ஹோமம் முதலானவை இத்தலத்தில் செய்வது சிறப்பு.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ அபிராமி
தலமரம்	: பிஞ்சிலம் (ஜாதிமல்லி), வில்வம்
தீர்த்தம்	: அமிர்த தீர்த்தம், சிவகங்கைத் தீர்த்தம், மார்க்கண்டேய தீர்த்தம், கால தீர்த்தம், அம்மனாறு
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: திருமால், பிரமன், துர்க்கை, வாசுகி, மார்க்கண்டேயரிஷி, அகஸ்திய ரிஷி, புலஸ்தியரிஷி, சிபி, சோம சர்மன், சிவ சர்மன், ஏமகிரீடன், சந்த்ர பூஷணன், பிரம்மராதி ராஜன், பஞ்ச சூர்யர் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ நாவுக்கரசர் மற்றும் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் இருவரும் இத்தலத்து ஈசனுக்குப் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்து உள்ளனர்.

தரிசன காலம் : காலை 06.00 மணி - பகல் 1.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 09.00 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி :

ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருக்கடையூர் - 609 311.
நாகப்பட்டினர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :
04364-287429



அமைவிடம் :

மரணபயம் போக்கி மாற இன்பம் அருளும் திருக்கடவூர்-வீரட்டம் ஸ்ரீ அபிராமி அம்பிகா ஸமேத ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வரர் திருக்கோயிலானது தற்போது திருக்கடையூர் என வழங்கப்படுகிறது. இந்த திவ்யதேசமானது நாகப்பட்டினம் மாவட்டம் மயிலாடுதுறை-திருநள்ளாறு சாலையில் மயிலாடுதுறையில் இருந்து சுமார் 14 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

இத்தலத்திற்கு அருகிலேயே உள்ள திரு அனந்தபுரம் என்னும் தலத்தில் ஸ்ரீ ஹனுமான் த்ரிநேத்ர தஸபுஜ ஆஞ்சநேயராக மூன்று கண்கள், 10 கரங்களுடன் அருள்பாலிக்கின்றார்.

ஸ்ரீ அபிராமி அம்பிகா ஸமேத
ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- அல்லது ஆயுள் சந்தா (20 வருடம்) ₹1000/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.03.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. March - 2025

Published on 5th March - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

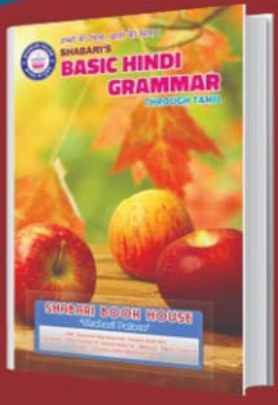
Basic Hindi Grammar

பயிற்சிகளுக்குரிய விடைகள் இணைக்கப்பட்டுள்ளது

Grammar at a glance

288 + 16 PAGES

JUST ₹200/- ONLY



Learn Hindi Grammar through Simple Tamil.

Speak and Write Hindi in the right way.

Improve yourself in the best possible way.

learning grammar made easy in Shabari's way.